ॐ जम्भेश्वराय नमः

श्री गुरू जम्भेश्वर जी महाराज द्वारा उच्चरित

सबदवाणी

❖ सम्पादक ❖

कृष्णानन्द आचार्य

(ऋषिकेश)

प्रकाशक :

जांभाणी साहित्य अकादमी

सैक्टर-1, E-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राजस्थान)

ISBN : 978-93-83415-35-9

(® प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है)

संस्करण : 2018

मूल्य - 30 रुपये

मुद्रक :

तिलोक प्रिंटिंग प्रेस

मोहता चौक, बीकानेर

श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः

भूमिका

''ना मेरे मायन ना मेरे बापन, मैं अपणी काया आप संवारी''

अखंड सच्चिदानन्द परब्रह्म परमात्मा नित्य एकरस रहने वाले शुद्ध स्वरूप के न तो कोई माता है न ही कोई पिता या कुटुम्ब परिवार ही है। किन्तु जब भी जैसी आवश्यकता पड़ती है। उसी के अनुसार वे अपनी नवीन काया का निर्माण स्वयं कर लेते हैं अर्थात् जैसा चाहते हैं उसी रूप में प्रगट हो जाते हैं। जैसा कि गीता आदि शास्त्रों में कहा है - परमात्मा अपनी माया द्वारा सृष्टि की रचना करता है। सांसारिक प्राणी तो माया के अधीन है किन्तु वह त्रिगुणात्मिका माया परमात्मा के अधीन है। वैसे तो परमात्मा का स्वरूप अज, अव्यय, निराकार,

निर्गुण आदि विशेषणों से युक्त है। किन्तु जब जब धर्म की हानि होती है और पाप की वृद्धि होती है। संसार में कष्ट आ जाते हैं तो प्रभु अपने विविध शरीरों को धारण कर लेते हैं, जिसको हम अवतार भी कहते हैं।

अवतार किस रूप में कैसा हो, इसके लिए कोई नियम नहीं है। कभी मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंह, राम, कृष्ण, बुद्ध आदि रूपों में वे परमात्मा स्वयं आते हैं। उनके लिए शरीर, देश, काल का कोई महत्व नहीं है। अपनी माया द्वारा जैसा चाहे वैसा रूप बना लेते हैं।

संवत् 1508 भादव कृष्ण अष्टमी के दिन ग्राम पीपासर में लोहट जी के घर में एक बालक रूप में शक्ति अवतरित हुई। हालांकि उनके माता-पिता नहीं है, वे स्वयंभू हैं। फिर भी हम सांसारिक प्राणी अपने आपको सांत्वना देने के लिए माता-पिता, देश-काल नाम से सम्बन्ध अवश्य ही जोड़ लेते हैं। तो इसी प्रकार

से हमने कहा कि लोहट जी उनके पिता हैं। हांसा देवी उनकी माता है। जम्भेश्वर उनका नाम है। पीपासर (नागौर) उनका ग्राम है। संवत् 1508 भादव कृष्ण अष्टमी को वे जन्मे हैं। माता-पिता को सुख देने के लिए जैसे अन्य बालक जगत व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार उन्होंने भी सांसारिक कार्य करते हुए लोहट हांसा को माता-पिता मानते हुए जगत में कार्य किया। जैसा कि वील्होजी कहते हैं –

बरस सात संसार, बाल लीला निरहारी।
बरस पांच बावीस, पाल एता दिन चारी।।
ग्यारै और चालीस, सबद कथिया अविनाशी।
बाल गुवाल गुरु ग्यान, मास तीन वरस पच्चासी।।
पनरासै रू तिराणवै, वदि मिंगसर नुंवि आगले।
पालटे रूप रहियो र, धू इडग जोति संभराथले।।

इस प्रकार अधिकतर समय सम्भराथल धोरे पर निरहारी रह कर अपनी अलौकिक ज्योति से जगत को अवलोकित किया। हम सभी का शरीर पांच तत्त्वों आकाश, वायु, तेज, जल, धरणी से बना है। इसलिए हमें जीवित रहने के लिए इन पांच तत्त्वों की आवश्यकता पड़ती है। इन पांचों तत्वों के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। किन्तु इस सामान्य नियम के विरूद्ध जिनका शरीर केवल तेजोमय है, ज्योति स्वरूप है, जिनके ये पांचों तत्त्व एवं प्रकृति अधीन है, उनको इनकी आवश्यकता नहीं पड़ती। इसीलिए श्री गुरू जम्भेश्वर जी आजीवन यत् किंचित व्यवहारिक कार्य करते हुए भी निरहारी ही थे। कहा भी है – ''पूरक पूर पूरले पौण, भूख नहीं अन्न जीमत कौण'' राव वीदे ने पूछा था कि आपके शरीर से अलौकिक सुगंध आ रही है। आपने ऐसा कौन सा सुगन्धित तेल मर्दन किया है। ऐसी विचित्र महकार तो मैंने कभी न सूंघी है। तब गुरु जम्भेश्वर जी ने

कहा –

मोरे अंग न अलसी तेल न मलियो, ना परमल पीसायों।
जीमत पीवत भोगत विलसत दीसा नाहीं, म्हांपण को आधारो।।

अर्थात् हे वीदा! पृथ्वी का गुण गन्ध है। जो पृथ्वी का अंश अन्न जल ग्रहण करता है, उसी के शरीर में से गन्ध आती है। मेरे तेजोमय शरीर में तो यह स्वाभाविक सुगंध है क्योंकि मैं अन्न जल ग्रहण करता नहीं, जो गन्ध का कारण है। मुझे इन चीजों की जरूरत नहीं है क्योंकि जो सबका आधार है उनको अन्य वस्तु की आवश्यकता नहीं।

इस संसार में आने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए संवत् 1542 में कार्तिक कृष्ण वदि अष्टमी को सद्पंथ की स्थापना की, जो उन्नतीस नियम व विष्णु की उपासना पर आधारित है। भूले हुए प्राणियों को फिर से चेताया। उनका बताया

हुआ युक्ति मुक्ति का मार्ग ही विश्नोई पंथ कहलाता है। हम विश्नोई समुदाय ने अपना सद्गुरू परमात्मा स्वीकार कर लिया है, अपना मान लिया है कि हमारे गुरूदेव हैं। जब विश्नोइयों ने अपना मान लिया तो वे अन्य लोग दूर हट गये। कहने लगे ये तो विश्नोइयों के गुरु हैं हमें उनसे क्या लेना-देना। यह सांसारिक प्राणियों की तुच्छ भावना है, वे किसी एक के नहीं किन्तु सभी के होते हैं, योगदर्शन कहता है – ''स तु सर्वेषां गुरु कालेनानवच्छेदात्'' वह परमात्मा तो सभी का गुरु है और हमेशा ही रहता है। देश, काल, वस्तु, नाम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। वह देश काल वस्तु से परे है। सदा एकरस रहने वाले हैं। घट-घट में व्यापक हैं।

दिल दिल आप खुदायबंद जाग्यो, सब दिल जाग्यो सोई।
तिल में तेल पहुप में वास, पांच तत्व में लियो प्रकाश।।

जिस प्रकार तिल में तेल, फूल में सुगंध रहती है, उसी प्रकार पांच तत्वों में वह सामान्य रूप से रहते हैं। विशेष साक्षात्कार हृदय में सम्भव है। तो क्या ये उपदेश केवल विश्नोइयों के लिए ही है। ये तो मानव मात्र के लिए मानवता की रक्षार्थ उपदेश दिये गये हैं। किसी एक समुदाय का कोई अधिकार नहीं।

इन नियमों और सबदवाणी की जरूरत आज जितनी है शायद आज से पहले के कुछ वर्षों में उतनी नहीं थी। मानवता की रक्षा के लिए ये प्रहरी का काम कर सकते हैं। हम सभी मानव मात्र का यह कर्तव्य हो जाता है कि समय-2 पर गुरु जम्भेश्वर जी जैसी महान् विभूतियों द्वारा दिये हुए उपदेशों का पालन करें। उनका बताया हुआ मार्ग सत्य सनातन होता है, उसे स्वीकार करें। अपने जीवन को सफल बनायें। इस वर्तमान भौतिक युग में मानव शांति का एक मात्र यही उपाय है। गुरु जी की सबदवाणी उन्नतीस नियम सभी वेद शास्त्रों का सार होते हुए

समसामयिक भी हैं। तत्कालीन जाति वर्ग का भेदभाव छोड़कर सबदवाणी का उपदेश दिया। इस समय भी वैसा ही उपदेश उपयोगी सिद्ध होगा।

अपने जीवन काल में अनेकों सबद गुरु जम्भेश्वर जी ने कहे। किन्तु इस समय हमारे पास 120 सबद ही प्रामाणिक रूप से विद्यमान हैं, बाकी सभी काल कवलित हो गये। तत्कालीन साधन का अभाव होने से अन्य प्रकार को न अपनाकर संतों ने कण्ठस्थ करके इन वर्तमान सबदों की रक्षा की थी। परम्परा से इन्हीं रूप में चलते आये, बाद में इनको हस्तलिखित रूप दिया गया था। जो आज यत्र तत्र अनेक रूपों में प्राप्त हैं। हस्तलिखित में भी व्यापक पाठ मतभेद है। समय ने करवट ली और वर्तमान आधुनिक युग में सबदवाणी प्रेस चढ़ी। उस समय भी सबदों में काफी उलट-पुलट हुई थी। संशोधन के नाम पर शुद्ध मरूभाषा को संस्कृतनिष्ठ हिन्दी सबदों में बदल दिया गया। इसलिए वर्तमान में प्रचलित

सबदवाणी पाठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों से मेल कम खाती है। कहीं-कहीं मतभेद है, कई पंक्तियां छूटी हुई प्रतीत होती हैं। यदि इस समय प्राचीन हस्तलिखित प्रतियो से छपवाया जाऐ तो जनता स्वीकार नहीं करेगी क्योंकि अधिकांश लोगों को ये वर्तमान प्रचलित सबद कण्ठस्थ हो चुके हैं तथा घर-घर में यही सबदवाणी पहुंच चुकी है। इसी को सत्य मानते हैं, प्राचीन को अशुद्ध मानते हैं। हमारे पास जनाधार ही सबसे प्रबल प्रमाण है।

इसलिए इस बार भी वही वर्तमान प्रचलित सबदवाणी का प्रकाशन इन बड़े अक्षरो में किया है, जो पहले भी संवत् 2024 से बिश्नोई मन्दिर ऋषिकेश से छपता आ रहा है। इसकी प्रतियां लगभग 49 हजार से ऊपर निकल चुकी हैं, उसी को ही इस समय आपके सामने जांभाणी साहित्य अकादमी के माध्यम से प्रकाशित करवाकर प्रस्तुत किया जा रहा है। जो पूर्व में प्रसिद्ध सबदवाणी

प्रचलित है उसको ज्यों की त्यों प्रकाशित करवाने का प्रयत्न किया है।

कुछ दिनों से एक आम चर्चा हो रही है कि हवन पद्धति कैसी होनी चाहिए। क्योंकि हम लोग सबदवाणी द्वारा ही हवन करते हैं। इसीलिए यहां पर इस समस्या का समाधान मैं अपनी बुद्धि अनुसार करना चाहता हूं। वैसे तो मैं चाहता था कि पूज्य महात्माओं, सद्भक्तों, विद्वानों से इस सम्बन्ध में विचार विमर्श करता किन्तु समयाभाव के कारण ऐसा नहीं हो सका। इस समय तो इस गुटके में थोड़ा-सा क्रमिक परिवर्तन करके वही रूप प्रस्तुत कर रहा हूं जो प्रचलित है। वैसे यज्ञ की कोई एक पद्धति अब तक हिन्दू समाज में नहीं हो सकी है। सभी समुदाय अपनी रुचि के अनुसार ही नई-नई पद्धतियां अपना रहे हैं। पद्धति कुछ भी हो लक्ष्य सभी का एक ही है।

इस गुटके में सर्वप्रथम ''गुरु जम्भेश्वर जी'' द्वारा बताई हुई सन्ध्या

(नवण) का पाठ रखा गया है। पूर्व में सन्ध्या द्वारा अन्तःकरण पवित्र कर लेने के बाद हवन प्रक्रिया प्रारम्भ की जाती है। तत्पश्चात् 'गोत्राचार' जिसके द्वारा वरूण, अग्नि, ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं का आह्वान आहुति ग्रहणार्थ किया जाता है। फिर 'वैदिक मन्त्र'' जिनके द्वारा पृथक्-पृथक् देवताओं को आहुतियां दी जाती हैं। जिससे वैदिक परम्परा का पालन भी भली-भांति हो जाता है। सूर्यादि देवताओं को प्रसन्न करने के बाद '120 सबदवाणी' का पाठ उपयुक्त है जिसके द्वारा पारब्रह्म परमात्मा विष्णु के निमित स्वाहा द्वारा हवन सामग्री घृतादिक अर्पण की जाती है। सबद का उच्चारण सस्वर करना ही श्रेयस्कर है। अन्यथा कोई लाभ नहीं होता। अन्तिम सबदों द्वारा दी हुई आहुतियां एक विष्णु के अर्पण होने से सभी उसमें समाहित हो जाते हैं। इसलिए मन्त्रों द्वारा अलग आहुति देने की आवश्यकता नहीं रह जाती। यही विधान है, परम्परा से चला भी आया है।

हवन के बाद कलश पूजा, पाहल मन्त्र, गुरु मन्त्र, बालक मन्त्र, उन्नतीस धर्म नियम तथा विविध प्रकार की व्याख्यायें अनेक छन्दों में दी गई है। अन्त में आरती, धूप मन्त्र, पूर्णाहुति आदि दी गई है। जो शायद आप लोग पसन्द करेंगे। यदि इसमें कोई त्रुटि होगी तो आगामी प्रकाशनों में सुधार दी जायेगी और अन्य कोई प्रैस सम्बन्धी त्रुटि के लिए आगामी प्रकाशन तक हम क्षमा प्रार्थी हैं।

-0-0-0-

निवेदन

''होम हित चित्त प्रीत सूं होय'' नित्य प्रति हवन करना चाहिए। इससे स्वार्थ तथा परमार्थ दोनों ही सिद्ध होते हैं। किन्तु सफल तभी होता है जब विधि-विधान से तथा चित्त लगाकर और प्रेम से किया जावे। अन्यथा बिना प्रेम तथा बिना एकाग्रता के किया हुआ हवन निष्फल होता है।

हवन प्रातःकाल सूर्योदय पश्चात् सायंकाल में सूर्यास्त से पूर्व ही करना चाहिए। रात्रि में हवन करने का विधान नहीं है। जगह साफ सुथरी, पवित्र जिसमें पक्का आंगन धुला हुआ तथा कच्चा आंगन लिपा हुआ होना परमावश्यक है।

हवनकर्ता भी अन्तर बाह्य शुद्ध पवित्र अन्तःकरण वाला होना जरूरी होता है। हवन सामग्री सम्यक् रूपेण देखकर लेनी चाहिए। जिसमें कीट आदि या अन्य

वर्जनीय वस्तुएं न हों। हवन में काम आने वाली सामग्री जैसे- गऊघृत, खोपरा, गूगल, अन्य सामग्री तथा पीपल, खेजड़ी, आम आदि की लकड़ी ली जा सकती है। हवन पश्चात् कलश पूजा करें। पाहल के लिए मिट्टी का नया घड़ा, उसके ऊपर सफेद वस्त्र आवश्यक है। ये सभी नियम हवनकर्त्ता के लिए पालनीय हैं।

आहुति 'स्वाहा' कहते हुए दी जानी चाहिए। स्वाहा कहकर दी हुई आहुति भगवान विष्णु एवं देवताओं को समर्पित होती है।

निवेदक

-कृष्णानन्द आचार्य

सन्ध्या (वृहन्नवण)

श्री गुरु जम्भेश्वर प्रणीतम्

विसंन-2 तूं भणि रे प्राणी, साधां भगतां ऊधरणौ।
देवला सह दानूं दायस्ब दानूं, मदसुदानूं महंमहणौ।
चेतोचित जांणी सारंग पांणी, नादे वेदे निज रहणौ।
आदि विसंन वाराहूँ, दाढां पति धर उधरणौ।
लिछमीं नारायण निहचल थांणौ, थिर रहणौ।
निमोह निपाप निरंजण सांमी,
भणि गोपालू त्रिभूवण तारूं। भणंता गुणंता पाप खयौ।
तिह तूठै मोख मुगति ज लाभै, अवचल राजूं खाफर खानूं खै गुवणौ।

चीतै दीठै मिरघ तरासै, बांघा रोलै गऊ तरासै, तीर पूल्यै गुण बांण हयौ।
तपति बुझै धारा हरि बूठै यो विसंन जपंता पाप खयौ
ज्यों भूख को पालण अन्न अहारूं, विष को पालन गुरड़ दवारू।
कांही कांही पंखेरवां सींचांण तरासै, विंसन जपंता पाप विणासै।
विसनु ही मन विसनुं भणियो, विसनु ही मन विसनु रहियौ।
इकवीस कोड़ि बैकुण्ठ पहोता, साचै सतगुरू को मंत्र कहियौ।

-: इति सन्ध्या मन्त्र सम्पूर्णम् :-

नोट :- *प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में इकवीस ही लिखा हुआ है। यह सन्ध्या मन्त्र प्राचीन हस्तलिखित से लिया गया है तथा यह ठीक भी है। किन्तु नवीन प्रेस से छपी हुई प्रतियों में इकवीस की जगह ''तेतीस'' पद भी मिलता है। अब आप जैसा ठीक समझें वैसा ही उच्चारण करें।*

अथ गोत्राचार प्रारम्भ

ओ३म् जदूवासरूपम् पूज्यत्रम् सामनिधिम्। गुणनिधिम्। आकाश पितरम्। सतारामम्। पंचम पाताल मुखम्। वरूण ते शिव मुखम् ।।१।। श्रीपार्वत्युवाच- कस्मिन्मासे। कस्मिन् पक्षे। कस्मिन् तिथौ। कस्मिन्वासरे। कस्मिन् नक्षत्रे। कस्मिन् लग्ने। उत्पन्नौऽसौ।।२।। श्री महादेवउवाच।। आषाढ़ मासे, कृष्ण पक्षे, अर्द्धरात्रौ, मीन लग्ने, चतुर्दश्यां शनिवासरे, रोहिणी नक्षत्रे, ऊर्ध्वमुखे, दृष्टपाताले, अगोचरन्नामाग्निः।।३।। श्री पार्वत्युवाच।। कातस्य माता क्वतस्य पिता क्वतस्य गोत्रः, कति जिह्वा प्रकाशित।।४।। श्रीमहादेव उवाच। अरणस माता वरुणष्पिता, शाण्डिल्यगोत्रे, वनस्पति पुत्रम्, पावकनामकम्, वसुन्धरम्।।५।। चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासो अस्य। त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्यां

आविवेश।।६।। निखिलब्रह्माण्डमुदरे यस्य द्वादश लोचनम्। सप्त जिह्वा।।७।। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वा।।८।। प्रथमस्तु घृतम्। द्वितीये यवम्। तृतीये तिलम्। चतुर्थे दधि। पञ्चमे क्षीरम्। षष्ठे श्रीखंडम्। सप्तमे मिष्टान्नम्। एतानि सप्तअग्नेर्भोजनानि। एतैः सप्तजिह्वा प्रकाश्यन्ते।।९।। ऊर्ध्वमुखा धोमुखाभिमुखैः साहाय्यङ्करोति। घृत-मिष्टान्नादि पदार्थाः महाविष्णुमुखे प्रविशन्ति। सर्वे देवा ब्रह्मा विष्णुः महेश्वरादयस्तृप्यन्ति।।१०।।

मन्त्र ऋग्वेद

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्न धातमम्।।१।। अग्नि: पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनै रुत स-देवां एह वक्षति।।२।। अग्निना रयिमश्नवत्पौषमेव दिवे दिवे। यशसंवीर वत्तमम्।।३।। अग्नेयं यज्ञमध्वरं विश्वत: परिभूरसि। स इद्देवेषुगच्छति।।४।। अग्निर्होताकविक्रतु: सत्यश्चित्रश्रवस्तम: देवोदेवेभिरागमद्।।५।। यदंगदाशुषे त्वमग्नेभद्रंकरिष्यसि। तवेत्तत्सत्यमंगिर:।।६।। उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्त र्धिया वयम्। नमोभरंत एमसि।।७।। राजंतमध्वराणां गोपामृतस्यदीदिविम् वर्धमानंस्वेदमे।।८।। स न: पितेव सूनवे अग्नेसूपायनो भव सचस्वा न: स्वस्तये।।९।।

वेदों के मन्त्र

ओ३म् शन्नो मित्र: शं वरुण: शन्नो भवत्वर्य मा। शन्न इन्द्रो बृहस्पति: शन्नो विष्णु रुरूक्रम:।।१।।

ओ३म् नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारम्।।२।।

यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य: ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।३।।

ओ३म् वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष:।।४।।

ओ३म् सा विश्वायु: सा विश्वकर्मा सा विश्वधाया इन्द्रस्यत्वा भागं सोमेना तनच्मि विष्णो हव्यरक्ष।।५।।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।।यजु०।।

ओ३म् भूर्भुव: स्व:। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्।। (चतुर्षु वेदेषु समानो मन्त्र:।)

-0-0-0-

अथ प्रात: सायंकाल के होम मन्त्र:

ओं अग्नये स्वाहा।।१।। ओं सोमाय स्वाहा।।२।। ओं प्रजापतये स्वाहा।।३।। ओं इन्द्राय स्वाहा।।४।।

ओं सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्य्य: स्वाहा।।१।। ओं सूर्य्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च:

स्वाहा।।२।। ओं ज्योति: सूर्य्य: सूर्य्यो ज्योति स्वाहा।।३।। ओं सजूर्देवेन सवित्रा, सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाण सूर्योवेत्तु स्वाहा।।४।।

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि स्वाहा।।१।। ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा।।२।। ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा।।३।। ओं सजूर्द्देवेन सवित्रा, सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणों अग्निर्वेत्तु स्वाहा।।५।।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।।१।। ओं भुवर वायवेऽपानाय स्वाहा:।।२।। ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।।३।। ओं भूर्भुव: स्वरग्निवाय्वादित्येभ्य: प्राणापानव्यानेभ्य: स्वाहा।।४।। ओं आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरों स्वाहा।।५।। ओं यां मेधां देवगणां पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।६।। ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।७।।

!! श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः !!

सबदवाणी प्रारम्भ

सबद–1

ओ३म् गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पिरोहित। गुरु मुख धरम बखाणीं।। जो गुरु होयबा सहजे शीले सबदे नादे वेदे तिहिं गुरु का आलिंकार पिछाणी।। छव दरशण जिहिं कै रूपण थापण, संसार बरतण निज कर थरप्या। सो गुरु परतक

जाणी।। जिहिं कै खरतर गोठ निरोत्तर वाचा। रहिया रूद्र समाणी। गुरु आप संतोषी अवरां पोखी। तंत महारस बाणी।। के के अलिया बासण होत हुतासण। तामैं खीर दुहीजूं।। रसूविण गोरस घीय न लीयूं। तहां दूध न पाणी।। गुरु ध्याईये रे ज्ञानी तोड़त मोहा। अति खुरसांणी छीजंत लोहा। पांणी छल तेरी खाल पखाला। सतगुरु तोड़े मन का साला।। सतगुरु है तो सहज पिछांणी। किसन चरित विणि काचै करवै रह्यो न रहसी पांणी।।१।।

सबद–2

ओ३म् मोरै छाया न माया लोही न माँसूँ। रक्तूँ न धातूँ, मोरे माई न बापूँ। आपण आपू, रोही न रापूँ, कोपूँ न कलापूँ, दुःख न सरापूँ।। लोई अलोई। त्यूँह त्रिलोई। ऐसा न कोई जपां भी सोई।। जिहिं जपिये आवागवण न होई।। मोरी आद न जाणत। महीयल धूँवा बखाणत।। उरध ढाकले तृसूलूँ। आद अनाद तो हम रचीलो, हमै सिरजीलो सै कोण।। म्हे जोगी कै भोगी कै अल्प अहारी ज्ञानी कै ध्यानी, कै निज कर्म धारी।। सोखी कै पोखी।

कै जल बिंब धारी, दया धरम थापले निज बाला ब्रह्मचारी।।२।।

सबद–3

ओ३म् मोरै अंग न अलसी तेल न मलियो। ना परमल पीसायों।। जीमत पीवत भोगत बिलसत दीसां नाहीं। म्हापण को आधारूं।। अड़सठ तीरथ हिरदै भीतर। बाहरि लोका चारूं। नान्हीं मोटी जीया जूँणी। एती सास फुरंतै सारूं।। बासंदर क्यूँ एक भणीजै। जिहिं कै पवण पिराणों।। आला सूका मेल्है नाहीं। जिहिं दिश करै मुहाणों।। पापे गुन्हे वीहै

नाहीं। रीस करै रीसाणों।। बहूली दौरे लावण हारूं। भावै जाण म जाणूं।। न तूं सुरनर, न तूं शंकर। न तूं राव न राणों।। काचै पिंड अकाज चलावै, महा अधूरत दाणों। मौरे, छुरी न धारूं लोह न सारूं न हथियारूं। सूरज को रिप बिहंडा नाहीं, तातै कहां उठावत भारूं।। जिहिं हाकंणड़ी बलद जू हांकै न लोहै की आरूं।।३।।

सबद-4

ओ३म् जद पवन न हुंता पाणी न हुंता। न हुंता धर गैणारूं।। चंद न हुंता सूर न हुंता। न हुंता गिगं दर तारूं।।

गऊ न गोरू माया जाल़ न हुंता न हुंता हेत पियारूं।। माय न बाप न बहण न भाई साखि न सैंण न हुंता। न हुंता पख परवारूं।। लख चौरासी जीया जूणी न हुंती। न हुंती वर्णी अठारा भारू।। सप्त पताल फुँणीद न हुंता। न हुंता सागर खारूं।। अजिया सजिया जीया जूणी न हुंती। न हुंती कुड़ी भरतारूं।। अर्थ न गर्थ न गर्व न हुंता। न हुंता तेजी तुरंग तुखारूं।। हाट पटण बाजार न हुंता। न हुंता राज दवारूं।। चाव न चहन न कोह का बांण न हुंता। तद हुंता एक निरंजण सिंभू, कै हुंता धंधू कारूं।। बात कदो

की पूछै लोई। जुग छत्तीस बिचारूं।। तांहि परैरे अवर छत्तीसूं। पहला अंत न पारूं।। म्हे तदि पणि हुंता अब पणि आछै, बलि़-बलि़ होयसां कहि कद कद का कहूं विचारूं।।४।।

सबद-5

ओ३म् अइया लो अपरंपर बांणी। म्हे जपां न जाया जीऊं।। नव अवतार निमो नारायण। तेपंण रूप हमारा थीयूं।। जती तपी तक पीर रिखेसर। कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं।। खेचर भूचर खेतरपाला परगट गुपता।।

कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं।। वासग सेस गुणिंद फुणिंदा। कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं।। चौसटि जोगिण बावन बीरूं। कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं। जपां तो एक निरालंभ शिंभु। जिहिं कै माई न पीऊं।। न तन रगतूं न तन धातूँ। न तन ताव न सीऊँ। सर्व सिरजत मरत बिवरजत। तास न मूल़ न लैणा कीयों।। अइयालों अपरंपर बाणी। म्हे जपां न जाया जीऊं।।५।।

सबद-6

ओ३म् भवणि-भवणि म्हे एकाजोती। चुणि-चुणि

लीया रतनां मोती।। म्हे खोजी था पण होजी नाहीं। खोज लहां धुरि खोजूँ।। अल्लाह अलेख अडाल अजोनि सिंभू। जिंहि का किसा बिनाणी।। म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी। निरति सुरति सब जाणी।। उतपति हिंदू जरणां जोगी। किरिया ब्राह्मण दिल दरवेसां उनं मुनं मुल्ला अकलि मिसलिमांणी।।६।।

सबद-7

ओ३म् हिंदू होय कै हरि क्यूँ ना जंप्यो। कायं दहदिस दिल पसरायों।। सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी वंणरायों।। गहंण गहंतै, बहंणि बहंतै। निरज लग्या रस

मूलि वहंतै। कांय रे मुरिखा तैं पालंग सेज निहाल बिछाई।। जा दिन तेरे होम न जाप न तप न किरिया। जाणि कै भागी कपिला गाई।। कूड़तणों जे करतब कीयो। ना तैं लाव न सायों।। भूला प्राणी आल बखाणी। न जंप्यौ सुर रायों।। छंदै कहां तो बहुता भावै। खरतर को पतियायौं। हिव की बेल़ां हिय न जाग्यौ। शंकि रह्यो कदरायों।। ठाढी बेल़ां ठार न जाग्यो। ताती बेल़ां तायों।। बिम्बै बेल़ां विष्णु न जंप्यों। ताछै का चीन्हों कछु कमायों।। अंति आलस भोला वै भूला, न चीन्हो सुररायौं।। पारब्रह्म की सुधि न जाणीं। तो

नागे जोग न पायौं।। परसरांम कै अरथि न मूवा। ताकीं निहचै सरी न कायों।।७।।

सबद-8

ओ३म् सुणि रे काजी सुणि रे मुल्लां। सुणि रे बकर कसाई।। किणरी थरपी छाली रोसो। किण री गाडर गाई।। सूलि चुभीजै करक दुहेली। तो है है जायो जीव न घाई।। थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावौ। खायबा खाज अखाजूँ।। चरि फिरि आवै सहजि दुहावै। तिसका खीर हलाली।। जिहंकै गल़े करद क्यूं सारो। थे पढ सुण रहिया

खाली।।८।।

सबद-9

ओ३म् दिल साबित हज काबो नेड़ै। क्या उलबंग पुकारो।। भाई नांऊं बलद पियारो। ताकै गलै करद क्यूं सारो।। बिन चीन्हैं खुदाय बिबरजत। केहा मुसलमाणो।। काफर मुकर होयकरि राह गुमायो।। जोय-जोय गाफिल करै धिंगांणों।। ज्यू थे पच्छिम दिशा उलबंग पुकारो। भल जे यों चीन्हों रहिमाणों।। तो रूह चलंतै पिण्ड पड़ंतै। आवै भिसत विवांणों।। चड़-चड़ भींते मड़ी मसीतें। क्यूं उलबंग

पुकारो।। काँहे काजै गऊ बिणासो। तो करीम गऊ क्यूं चारी।। काहीं लीयो दूधूं दहियूं। काहीं लीयों घीयूँ महियूं।। काहीं लीयों हाडूं मासूं। काही लीयूं रक्तूं रूहियूं।। सुणि रे काजी सुणि रे मुल्लां। या मै कूंण भया मुरदारूं।। जीवां ऊपर जोर करीजै। अंतकाल होयसी भारूं।।९।।

सबद-10

ओ३म् बिसमिल्ला रहमान रहीम। जिहिंकै सदकैं भीना भीन।। तो भेटीलौ रहमान रहीम। करीम काया दिल करणी।। कलमा करतब कौल कुराणों। दिल खोजो

दरबेश भईलो।। तइया मुसलमाणों। पीरां पूरिषां जमी मुसल्लां।। कर्तब लेक सलामों। हम दिल लिल्ला तुम दिल लिल्ला। रहम करै रहमाणों।। इतने मिसले चालो मीयां। तो पावो भिस्त इमाणों।।१०।।

सबद-11

ओ३म् दिल साबित हज काबो नेडै। क्या उलबंग पुकारो।। सीने सरवर करो बंदगी। हक्क निवाज गुजारो।। इंहि हेड़ैं हर दिन की रोजी, तो इसही रोजी सारो।। आप खुदायबंद लेखो मांगै।। रे बिनही गुन्हैं जीव क्यूं मारो।।

थे तकि जांणों तकि पीड़ न जाणों। बिणि परचैं बाद निवाज गुजारो।। चरि फिरि आवै सहजि दुहावै। तिसका खीर हलाली।। तिहकै गले करद क्यूं सारो। थे पढ़ सुणि रहिया खाली।। थे चड़ि-चड़ि भींते मड़ी मसीतै। क्या उलबंग पुकारो।। कारण खोटा करतब हींणां। थारी खाली पड़ी निवाजूं।। किहिं ओजू तुम धोवो आप। किहिं ओजू तुम खंडा पाप।। किहिं ओजू तुम धरो धियांन। किहिं ओजू चीन्हों रहमान।। रे मुल्ला मन माहि मसीत निवाज गुजारिये। सुणंता ना क्या खरै पुकारियै।। अलख न लखियो खलक

पिछाण्यौ। चांम कटे क्या हुइयों।। हक्क हलाल पिंछाण्यौं नांहीं। तो निहचै गाफल दोरै दीयों।।११।।

सबद-12

ओ३म् महमंद-महमंद न करि काजी। महमंद का तो विषंम बिचारूं।। महमंद हाथि करद जो होती। लोहै घड़ी न सारूं।। महमंद साथि पकंबर सीधा। एक लख असी हजारूं। महमंद मरद हलाली होता। तुंमे ही भए मुरदारूं।।१२।।

सबद-13

ओ३म् कांय रे मुरिखा तैं जनम गुमायों।। भुंय भारी ले भारूं।। जा दिन तेरे होम नै जाप नै तप नै किरिया। गुरु न चीन्हों पंथ न पायों अहल़ गई जमवारूं।। ताती बेला ताव न जाग्यो। ठाढ़ी बेला ठारूं।। बिंबै बैला विंष्णु न जंप्यो। ताथै बहोत भई कसवारूं।। खरी न खाटी देह बिणाठी। थिरि न पवणां पारूं।। अहनिश आवं घटंती जावै। तेरे स्वास सबी कसवारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यो। ते नर कुवरण कालूं।। जां जन मंतर विष्णु न

जंप्यो। ते नगरे कीर कहारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यौ। कांध सहै दुख भारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यौ। ते घण तण करै अहारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यौ। ताको लोही मांस बिकारूं। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यौ। गावैं गाडर सहरे सूवर, जल़म-जल़म अवतारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यौ। ओडां कै घरि पूंहण होयसी पीठ सहै दुख भारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यो। राने बासो मोनी बैसे, ढूके सूर सवारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यो। ते अचल उठावत भारूं।। जां जन मंतर विष्णु

न जंप्यौ। ते ना उतरिबा पारूं।। जां जन मंतर विष्णु न जंप्यो। ते नर दौरे घुप अंधारूं।। तांथे तंत न मंत न जड़ी न बूंटी। ऊंडी पड़ी पहारूं। विष्णु नै दोस किसो रे प्रांणी। तेरी करणी का उपकारूं।।१३।।

सबद-14

ओ३म् मोरा उपख्यांन वेदूं कंण तंत भेदूं। शासत्रे पुसतके लिखणां न जाई।। मेरा सबद खोजो। ज्यूं सबदे सबद समाई।। हिंरणा दोह क्यूँ हिरण हतीलूँ। किसन चरित विणि क्यूँ बाघ बिडारत गाई।। सुणहीं सुणहां का जाया।

मुरदा बघेरी बघेरा न होयबा।। किसन चरित विणि। सीचांण कबहीं न सुजीऊं।। खर का सबद न मधुरी बाणी।। किसन चरित विणि, श्वान न कबही गहीरूं।। मुंडी का जाया मुंडा न होयबा। किसन चरित विणि, रीछां कबही न सुचीलूं।। बिल्ली की इन्द्री संतोष न होयबा, किसन चरित विणि, काफरा न होयबा लीलूं।। मुरगी का जाया मोरा न होयबा। किसन चरित विणि, भाकला न होयबा चीरूं।। दंत बियाई जळम न आई।। किसन चरित विणि, लोहै पड़े न काठ की सूलूं। नीबड़िये नारेल न होयबा। किसन चरित विणि,

छिलरे न होयबा हीरूं।। तूंबणि नागर बेलि न होयबा। किसन चरित विणि, बांवली न केली केलूं। गऊ का जाया खगा न होयबा। किसन चरित विणि, दया न पाल़त भीलूँ।। सूरी का जाया हसती न होयबा। किसन चरित बिन, औछा कबही न पुरूं।। कागंणि का जाया कोकिला न होयबा। किसन चरित विणि, बुगली न जणिबा हंसू। ज्ञानी कै हिरदै परमोधि आवै, अज्ञांनी लागत डांसू।।१४।।

सबद–15

ओ३म् सुर मां लेणा झींणा सबदूँ। म्हे भूल न भाख्या

थूलूं।। सो पति बिरखा सींच पिरांणी। जिहिं का मीठा मूल समूलूँ।। पाते भूला मूल़ न खोजो। सींचो कांय कु मूलूँ।। विसन–विसन भणि अजर जरीजै। यह जींवण का मूलूँ।। खोजि पिरांणी ऐसा बिनाणी। केवल ज्ञानी।। ज्ञान गहीरूं। जिहिं कै गुणे न लाभत छेहूं।। गुरु गेंवर गरबा शीतल नीरूं। मेवां ही अति मेऊं।। हिरदै मुकता कवंल संतोषी। टेवां ही अंति टेऊं।। चढ़ि करि बोहिता भव जल पारि लंघावै। सो गुरु खेवट खेवा खेहूं।।१५।।

सबद–16

ओ३म् लोहै हूंता कंचण घड़ियों। घड़ियों ठाम सुठाऊं।। जाटा हूंता पात करीलूं। एह किसन चरित परिवाणों।। बेंड़ी काठ संजोगे मिलिया। खेवट खेवा खेहूं।। लोहा नीर किसी विध तरिबा। उत्तम संग सनेहुं।। विणि किरिया रथ बैसैंला। ज्यूं काठ संगीणी लोहा नीर तरीलों।। नांगड़ भागंड़ भूला महियल। जीव हतै मड़ खाईलो।।१६।।

सबद–17

ओ३म् मोरै सहजे सुन्दरि लोतर वाणी। ऐसो भयो मन ज्ञानी।। तइया सासूं। तइया मासूं। रगतूं रूहीयूं।। खीरूं नीरूं। ज्यूं कर देखूं। ज्ञान अंदेसू। भूला प्राणी कहै सो करणो।। अई अमांणो। तंत संमांणो। अइया लो म्हे पुरष न लेणा नारी।। सो दत सागर सो सुभ्यागत। भवणि–भवणि भिखियारी।। भीखी लो भिखियारी लो। जे आदि परमतंत लाधो। जांकै बाद बिराम विरांसो सांसौ। तानै कूंण कहसी साल्हीया साधो।।१७।।

सबद-18

ओ३म् जां कुछि-जां कुछि तां कछू न जांणी। नां कुछि नां कुछि तां कुछि जांणी।। नां कुछि नां कुछि अकथ कहाणी। नां कुछि नां कुछि इमरत बाणी। ज्ञानी सो तो ज्ञाने रोवत। पढ़िया रोवत गाहै।। केल करन्ता मोरी मोरा रोवत। जोय-जोय पगां दिसांही।। उरध खैंणी मन उंनमंन रोवत। मुरिखा रोवत धांहीं।। मरणत माघ संघारत खेती। के के अवतारी रोवत राही।। जड़िया बूंटी जे जग जीवै। तो बैदा क्यूं मरि जांही।। खोज पिरांणी ऐसा बिनाणीं।

नुगरा खोजत नाहीं। जां कुछि होता नां कुछि होयसी। बलि कुछि होयसी ताहीं।।१८।।

सबद-19

ओ३म् रूप अरूप रमूं, पिण्डे ब्रह्मण्डे। घटि-घटि अघटि रहायों। अनन्त जुगां मैं अमर भणी जूं। नां मेरे पिता न मायों।। नां मेरे माया न छाया। रूप न रेखा। बाहरि भीतरि अगम अलेखा।। लेखा एक निरञ्जंण लेसी। जहां चीन्हों तहां पायों।। अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर। कोई-कोई गुरुमुखि बिरला न्हायों।।१९।।

सबद-20

ओ३म् जां जां दया न मया। तां तां बिकरम कया।। जां जा आवै न वैसूं। तां तां सुरग न जैसूं।। जां जां जीव न जोती। तां तां मोख न मुकती।। जां जां दया न धरमूं। तां तां बिकरम करमू।। जां जां पाले न शीलूं। तां तां करम कुचीलू।। जां जां खोज्या न मूलूं। तां तां प्रतकि थूलूं।। जां जां भेद्या न भेदूं। तो सुरगे किसी उमेदूं।। जां जां घमण्डै स घमण्डू। ताकै ताव न छायों। सूतै सास नसायों।।२०।।

सबद-21

ओ३म् जिहिं कै सार असारूं। पार अपारूं। थाघ अथाघूं। उमंग्या स माघूं।। ते सरवर कित नीरूं। बाजालो भल बाजालो। बाजा दोय गहीरूं।। एकण बाजै नीर बरसै। दूजै मही बिरोलत खीरूं।। जिहि कै सार असारू। पार अपारूं।। थाघ अथाघूं। उमग्या स माघू।। गहर गंभीरूं। गिगन पयाले बाजत नादूं। माणिक पायौ फेर लुकायो। नहीं लखायो।। दुनियां राती बाद विवादूं। बाद बिवादे दांणू खीणा।। ज्यूं पहूपे खींणा भंवरी भंवरा। भावैं

जाण म जांणि पिरांणी।। जोलै का रिप जंवरा। भेर बाजा तो एक जोजनो अथवा तो दोय जोजनो। मेघ बाजा तो पंच जोजनो।। अथवा तो दश जोजनो। सोई उत्तम लेरे पिरांणी।। जुगां जुगांणी सति करि जांणी। गुरु का सबद जु बोलो झींणी बाणी।। जिहि का दूरां हूंतै दूर सुणीजै। सो सबद गुणा कारूं।। गुणा सारूं बले अपारूं।।२१।।

सबद-22

ओ३म् लो लो रे राजिंदर रायौं। बाजै बाव सुवायों।। आभै अमी झुरायों। कालर करसंण कीयों।। नेपै कछू न

कीयों। अइया उत्तम खेती।। को को इमृत रायो। को को दाख दिखायों।। को को ईख उपायों। को को नींब निबोलीं। को को ढाक ढकोली।। को को तूसण तूंबण बेली। को को आक अकायों।। को को कछू कमायों। ताका मूल कुमूलू।। डाल कुडालूं। ताका पात कुपातूं। ताका फल बींज कुबीजूं। तो नीरे दोस किसायौं।। क्यूं क्यूं भए भागे ऊंणा। क्यूं क्यूं करम बिहूंणा।। को को चिड़ी चमेड़ी। को को उल्लू आयों।। ताकै ज्ञान न जोती। मोख न मुगती।। याके करम इसायों। तो नीरे दोस किसायों।।२२।।

सबद-23

ओ३म् साल्हिया हुवा मरण भय भागा। गाफिल मरणै घणा डरै।। सतगुरु मिलियो सतपंथ बतायो। भ्रान्त चुकाई। मरणै बहु उपकार करै।। रतन काया सोभंति लाभै। पार गिरांयै जीव तिरै।। पार गिराये सनेही करणी। जंपो विष्णु न दोय दिल करणी।। जंपो विष्णु न निंदा करणी। मांडो कांध विस्नु कै सरणै।। अतरा बोल करो जे साचा। तो पार गिरायं गुरु की बाचा।। रवंणा ठवंणा चवरां भवणां। ताहि परे रै रतन काया छै।। लाभै किसे

विचारे। जे नवीये नवणीं।। खवीये खवणी, जरिये जरणी। करिये करणी। तो सीख हुवां घर जाइये। रतन काया सांचे की ढोली।। गुरु प्रसादे केवल ज्ञाने। धरम आचारे। शीले संजमे। सतगुरु तूठै पाइये।।२३।।

सबद-24

ओ३म् आसण बैसण कूड़ कपट्टण। कोई कोई चींन्हत अवजू बाटे। अवजू बाटे जे नर भया। काचीं काया छोड़ किंवलासे गया।।२४।।

सबद-25

ओ३म् राज न भूलीलो। राजिंदर दुनी न बंधै मेरूं।। पवणा झोलै बीखर जैंला। धुंवर तणा जैं लोरूं।। ओलस आभै तणा लहलोरूं। आडा डम्बर केती बार बिळम्बण औ संसार अनेहूं।। भूला प्रांणी विष्णु न जंप्यो। मरण विसारो केहूं।। म्हां देखंता देव दाणूँ सुर नर खीणा। जंबू मंझे राचि न रहिबा थेहूं।। नदिये नीर न छींलर पाणी। धूंवर तणा जे मेहूं।। हंस उड़ाणों पंथ बिलंब्यो आसा सास निरास भईलो।। ताछै होयसी रंड निरंडी देहूं। पवणा झोलै बीखर जैला गैंण बिळंबी खेहूं।।२५।।

सबद-26

ओ३म् घण तण जीम्या को गुण नांहीं। मल भरिया भण्डारूं।। आगै पीछै माटी झूलै। भूला बहैज भारूं।। घणा दिना का बड़ा न कहिबा। बड़ा न लंघिबा पारूं। उत्तम कुली का उत्तम न होयबा। कारण किरिया सारूं।। गोरख दीठां सिद्ध न होयबा पोह उतरबा पारूं।। कळजुग बरतै चेतो लोई। चेतो चेतण हारूं।। सतगुरु मिलियौ सत पंथ बतायो। भ्रांति चुकाई बिद गारातैं उदगा गारूं।।२६।।

सबद-27

ओ३म् पढ़ि कागल वेदू सासतर सबदूं। पढ़ सुण रहिया कछु न लहिया।। निगुरा उमंग्या काठ पखांणो कागल पोथा ना कुछि थोथा ना कुछि गाया गीऊं।। किणि दिस आवै किण दिस जावै। माई लखै न पीऊं।। इंडे मध्ये पिण्ड उपन्नो, पिण्डे मध्ये बिम्ब उपन्नों, किण दिस पैठा जीऊं। इंडे मध्ये जीव उपन्नो।। सुणि रे काजी सुणि रे मुल्ला। पीर रिखेसर रे मसवासी तीरथ वासी। किण घट पैठा जीऊं।। कंसा सबदे कंस लुकाई बाहरि गई न रीऊं।।

खिणि आवै खिणि बाहरि जावै। रूति करि बरसत सीऊं।। सोवन लंक मंदोवर काजै। जोय-जोय भेद विभीषण दीयों।। तेल लियो खल चोपै जोगी। तिहिंको मोल थोड़े रो कीयों।। ज्ञाने ध्याने नादे वेदे जे नर लेणा। तत भी ताही लीयों।। करण दधीच सिंवर बलि राजा। हुई का फल लीयों।। तारादे रोहितास हरिचन्द। काया दशबन्ध दीयों।। विस्नु अजंप्या जलम अकारथ। आके डोडा खींपे फलीयो।। काफर बिबरजत रूहीयूं। सेंतू भांतू बोह रंग लेणा। सब रंग लेणा रूहीयूं।। नानारे बोह रंग न राचै काली ऊंन

कुजीऊं।। पाहे लाख मजींठी राता।। मोल न जिहिं का रूहीयूं।। कब हीं औ ग्रह ऊथरि आवै। शैतानी साथै लीयौं।। ठोठ गुरु विष लीपति नारी। जद बंकै जद बीरूं।। अमृत का फल एक मन रहिबा। मेवा मिष्ट सुभायों।। अशुद्ध पुरूष विष लीपति नारी। बिन परचे पार गिराय न जाई।। देखत अन्धा सुणता बहरा। तासों कछु न बसाई।।२७।।

सबद–28

ओ३म् मच्छी मच्छ फिरै जल भीतरि। तिहिं का माघ न जोयबा।। परम तंत है ऐसा। आछै उरबार न ताछै

पारूं।। ओवड़ छेवड़ कोई न थीयों। तिहिं का अन्त लहीबा कैसा।। ऐसा लो भल ऐसालो। भल कहो न कहा गहीरूं।। परम तंत कै रूप न रेखा। लीक न लेहूं खोज न खेहूं।। वरण बिबरजत। भावैं खोजो बांवन बीरू।। मीन का पंथ मीन ही जांणै। नीर सुरंगम रहीयूं।। सिध का पंथ कोई साधू जाणंत। बीजा बरतण बहियों।।२८।।

सबद–29

ओ३म् गुरु कै सबद असंख परमोधी। खार समंद परीलो।। खार समंद परै परेरै। चौखंड खारूं पहला अन्त

न पारूं।। अनन्त कोड़ गुरु कीं दांवण बिलम्बी। करणी साच तरीलो।। सांझे जमों सबेरे थापंण। गुरु की नाथ डरीलो।। भगवीं टोपीं थल सिरि आयो। हेत मिलाण करीलो।। अंबाराय बधाई बाजै। हिरदै हरि सिंवरीलो। किसन मया चोखंड किरसाणी। जम्बू दीप चरीलौ।। जम्बूदीप ऐसो चरि आयौ। इसकन्दर चेतायो।। मान्यो शील हकीकत जाग्यो। हक की रोजी धायों।। ऊंनथ नाथ कुपह का पोहमा आंण्या। पोह का धुरि पोहचायौ।। मोरै धरतीं ध्यान वणासपति बासो। ओजू मंडल छायों।। गीदूं मेर पगांणै परबत। मनसा

सौड़ि तुलायों।। ऐ जुग चार छतींसां अवर छतीसां। असरा बहै अंधारी, म्हे तो खड़ा बिहायों।। तेतीसां की बरग वहां म्हे। बारां काजै आयों।। बारा थापि घणा न ठाहर। मतां तो डील्है–डील्है कोड़ि रचायों।। म्हे ऊंचै मण्डल का रायों। समन्द बिरोल्यो वासग नेतो। मेर मिथांणी थायों।। सैंसा अरजंण मार्‍यो कारज सार्‍यौ। जब म्हे रहंसि दमामा बायो।। फेरीं सींत लई जद लंका। तदि म्हे ऊथे थायों। दह सिर का दश मसतक छेद्या। बाण भला निरतायों।। म्हे खोजी था पण होजी नाही। लहि–लहि खेलत डायों।। कंसासुर सूँ जूवै

रमियां। सहजे नन्द हरायों।। कूंत कंवारी कर्ण समानो। तिहिं का पोह पोह पड़दा छायों।। पाहे लाख मजींठी पाखो। बन फल राता पींझू पाणी के रंग धायों।। तेपणि चाखि न चाख्या। भाखि न भाख्या। जोय-जोय लियो फल फल कैर रसायौं।। थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या न चीन्हों सुर रायों।। कण बिण कूकस कांय पीसो। निहचै सरी न कायो।। म्हे अवधू निरपख जोगी। सहज नगर का रायों।। जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरपां। साचा सूं सत भायों। मोरै मनहीं मुंदरा तनहीं कंथा। जोग मारग सहडायों।। सात सायर म्हे

कुरलै कीया। ना म्हे पीया न रह्या तिसायों।। डाकणि शाकणि निंद्रा खुध्या ऐ म्हारै ताबै कूप छिपायो।। म्हारै मनहीं मुदरा तनही कंथा। जोग मारग सह लीयो।। डाकणि शाकणि निंद्रा खुध्या। ऐ म्हारै मूल न थीयों।।२९।।

सबद-30 (कुंचीवाला)

ओ३म् आयो हकारो जीवड़ो बुलायो। कहि जिवड़ा के करण कमायो? थरहर कंपै जिवड़ो डोलै। उत माई पीव न कोई बोलै।। सुकरत साथ सगाई चालै। स्वांमी पवणां पांणी निवण करंतो।। चंदे सूरे शीस निवन्तो। विसन सुरां पोह पूछ

लहन्तो।। इहिं खोटे जन मन्तर स्वामी। अहनिश तेरो नाम जपंतो।। निगंम कमाई मांगी मांग। सुरपति साथ सुरा सू रंग।। सुरपति साथ सुरां सूं मेलो। निज पोह खोज ध्यिायाइये।। भोम भली किरसाण भी भला। बूठो है जहां बाहिये।। करसंण करो सनेही खेती। तिसिया साख निपाइयै।। लुणिचुणि लीयो मुरातब कीयो।। कण काजै खड़ गाहिंये।। कणतुस झेड़ो होय नवेड़ो। गुरुमुखि पवंणा उड़ाइयै।। पवंणा झोलै तुस उडैलो। कण ले अरथि लगाइये।। यूं क्यू भलो जे आप न जरिये।। औरां अजर जराइये।। यूं क्यूं भलो जे

आप न फरिये। अवरां अफर फराइये।। यूं क्यूं भलो जे आप न डरिये। अवरां अडर डराइये।। यूं क्यूं भलो जे आप न मरिये। अवरा मारण धाइये।। पहलूं किरिया आप कुमाइये। तो अवरा न फुरमाइये। जो कुछ कीजै मरणै पहले। मत भल कहि मर जाइये।। शौच सिनान करो क्यूं नाहीं। जिवड़ा काजै न्हाइये।। शौच सिनान कियो जिन नाहीं। होय भंतूला बहाइये।। शील बिबरजित जीव दुहेलो। जमपुरी ये संताइये।। रतन काया मुख सूवर बरगो। अबखल झंखे पाइये। सवामण सोनो करणे पाखो। किण पर वाह चलाइये। एक गऊ

ग्वाला ऋषि मांगी। करण पखो किण सुरह सुबच्छ दुहाइये। करण पखो किण कंचण दीन्हों। राजा कवंण कहाइये।। रिण रूधै सामी करणे पाखो। कुण हीरा डसण पुलाइये। किहिं निश धरम हुवै धुरि पूरौ। सुर की सभा समाइयै।। जे नंविये नवणी खंविये खवणीं। जरिये जरणी। करियै करणी। तो सीख हुई घरि जाइये।। अहनिश धरम हुवै धुर पूरो। सुर की सभा समाइये।। किहिं गुण बिदरो पारि पहूंतो। करणै फेरि बसाइये।। मन मुखि दान जु दीन्हों करणै। आवागवण जु आइये।। गुरुमुखि दान ज दीन्हों बिदरै। सुर की सभा समाइयै।।

निज पोह पाखो पारि असी परि। जाणी गीत बिवाहे गाइये।। भरमी भूला वाद विवाद। आचार बिचार न जांणत स्वाद। कीरति के रंग राता मुरखा मन हठ मरै। ते पार गिरांयै कित उतरै।।३०।।

सबद–31

ओ३म् भल मूल सींचो रे प्रांणी। ज्यूं का भल बुद्धि पावै।। जांमण मरंण भव काल जु चूकै। तो आवा गवण न आवै।। भल मूल सींचो रे प्राणी। ज्यूं तरवर मेल्हत डालूं। हरि परि हरि की आंण न मानी। झंख्या झूल्या

आलूं।। देवां सेवां टेव न जांणी। न बंच्या जम कालू। भूलै प्रांणी विष्णु न जंप्यो मूल न खोज्यौ। फिरि-फिरि जोया डालूं।। बिण रैणायर हीरे न नीरे। नग न सीपे तके न खोळा नाळूं।। चलंण चलंतै। बासि बसंतै। जीव जिवंतै।। सास फुरंतै काया निवंती। कांय रे प्राणी तै विष्णु न घाती भालूं।। घड़ी घटंतरि पहरि पटंतरि। रात दिनंतरि। मासि पखंतरि। खिणि ओल्हरिबा कालूं।। मीठा झूठा मोह बिटंबण। मकर समाया जालूं।। कबही को बाइंदो बाजंत लोई। घड़िया मस्तक तालूं।। जीवां जूणी पड़ै परासा। ज्यूं झींवर

मच्छी मच्छा जालूं।। पहले जिंवड़ो चेत्यो नाहीं। अब ऊंडी पड़ी पहारूं।। जीवर पिंड बिछोड़ो होयसी। ता दिन थाक रहै सिर मारूं।।३१।।

सबद–32

ओ३म् कोड़ गऊ जे तीरथे दानों। पंच लाख तुरंगम दानों।। कण कंचण पाट पटंबर दानों। गज गेंवर हसती अति बल दानों।। करण दधीच सिंवर बलि राजा। श्रीराम ज्यूं बहुत करै आचारूं।। जां जां बाद विवादी अति अहंकारी लबद सवादी। किसन चरित विणि नाहिं उतरिबा पारूं।।३२।।

सबद–33

ओ३म् कवंण न हूवा कवंण न होयसी। किण न सह्या दुख भारूं। कवंण न गइया कवंण न जासी। कवण रह्या संसारूं।। अनेक अनेक चलंता दीठा। कलि का माणस कवंण विचारूं।। जो चित होता सो चित नाहीं। भल खोटा संसारू।। किसकी माई किसका भाई। किसका पख परवारूं।। भूली दुनिया मरि मरि जावै। न चीन्हों करतारूं।। विसन विसन तू भणि रे प्राणीं। बलि बलि बारम्बारूं।। कसणी कसबा भूल न बहिबा। भाग परापति सारूं।। गीता नाद कवीता नाऊं। रंग

फटारस टारूं।। फोकट प्रांणी भरमे भूला। भल जे यों चीन्हों करतारूं।। जामंण मरंण बिगोवो चूकै। रतन काया ले पारि पहूंचै। तो आवागवणि निवारूं।।३३।।

सबद–34

ओ३म् फुंरण फुंहारे किसनी माया। घण बरसंता सरवर नीरे।। तिरी तिरन्तै तीर। जे तिस मरै तो मरियों।। अंनू धंनू दूधू दहीयूं। घीऊं मेऊं टेऊं जे लाभंता। भूख मरै तो जीवण ही बिण सरियों।। खेत मुक्त ले किसना अर्थो। जे कंध हरै तो हरियों।। विसनु जपन्ता जीभ जु थाकै। तो

जीभड़ियां बिणि सरियों। हरि–हरि करता हरकति आवै। तो ना पछतावो करियौं।। भीखी लो भिखियारी लो जे आदि परम तंत लाधो।। जांकै बाद विरांम बिरांसो सांसो। तांहनै कूंण कहसि साल्हिया साधो।।३४।।

सबद–35

ओ३म् बलि बलि भणत वियासूं। नां नां अगम न आसूं।। नां नां उदक उदासूं। बल बल भई निरासूं। गल मैं पड़ी परासूं। जां जां गुरु न चीन्हों। तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलत थूलूं।।३५।।

सबद–36

ओ३म् काजी कथै कुराणों। न चीन्हों फुरमांणों।। काफर थूल भयाणों। जइया गुरु न चीन्हों।। तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलंत थूलूं।।३६।।

सबद–37

ओ३म् लोहा लंग लुहारूं। ठाठां घड़ै ठठारूं।। उत्तम करम कुम्भारूं। जइया गुरु न चीन्हों।। तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलंत थूलूं।।३७।।

सबद-38

ओ३म् रे रे पिंड स पिंडू। निरघण जीव क्यूं खंडू।। ताछै खंड बिहंडू। घड़ीये सै घमंडू।। अइया पंथ कुपंथू। जइया गुरु न चीन्हों। तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलंत थूलूं।।३८।।

सबद-39

ओ३म् उत्तम संग सुसंगू। उत्तम रंग सुरंगू।। उत्तम लंग सुलंगू। उत्तम ढंग सुढंगू। उत्तम जंग सुजंगू। तातैं सहज सुलीलूं।। सहज सुपंथू। मरतक मोख दवारूं।।३९।।

सबद-40

ओ३म् सप्त पयाले तिहूं तिरलोके चवदा भुंवणे गगन गहीरे।। बाहरि भीतरि सर्व निरंतरि। जहां चीन्हों तहां सोई।। सतगुरु मिलियों सतपंथ बतायो। भ्रांति चुकाई। अवर न बुझिबा कोई।।४०।।

सबद-41

ओ३म् सुण राजिंदर सुण जोगिंदर। सुण शोखिंदर सुणि सोफिंदर।। सुणि काफिंदर।। सुणि चाचिंदर। सिद्धक

साध कहांणी।। झूंठी काया उपजत विणसत। जां जां निगुरे थिती न जांणी।।४१।।

सबद-42

ओ३म् आयसां काहे काजै खेह भकरूड़ो। सेवो भूत मसांणी।। घड़ेऊंधै बरसत बहु मेहा। तिहिंमा किसन चरित बिणि पड़्यो न पड़सी पाणी। जोगी जंगम नाद डिगम्बर संन्यासी ब्राह्मण ब्रह्मचारीं।। मन हट पढिया पंडित। काजी मुल्ला खेलै आप दुवारी।। निहंचै कायों वायों होयसैं। जे गुरु बिन खेल पसारी।।४२।।

सबद-43

ओ३म् ज्यूं राज गए राजिन्दर झूरै। खोज गए नै खोजी।। लाछ मुई गिरहायत झूरै। अरथ बिहूंणा लोगी। मोर झड़े किरसाण भी झूरै। बिंद गए नै जोगी।। जोगी जंगम जपिया तपिया। जतीं तपी तक पीरूं। जिहिं तुल भूला पाहण तोलै। तिहि तुल तोल न हीरूं।। जोगी सो तो जुग जुग जोगी। अब भी जोगी सोई।। थे कान चिरावो चिरघट पहरो। आयसां इह पाखंड तो जोग न कोई।। जटा बधारो जीव सिंघारो। आयसां इहि पाखंड तो जोग न होई।।४३।।

सबद-44

ओ३म् खरतर झोली खरतर कंथा। कांध सहै दुख भारूं। जोग तणी थे खबर न पाई। कांय तज्या घर बारूं।। ले सूई धागा सींवण लागा। करड़ कसींदि मेखलीयों।। जड़ जटा-धारी लंघै न पारीं। बाद बिबादे बेकरणो।। थे बीर जपो बेताल धियावो। कांय न खोजो तंत कणो।। आयसां डंडत डंडू मुंडत मुंडू। मुंडत माया मोह किसो।। भरमी बादी बादे भूला कांय न पाली जीव दयों।।४४।।

सबद-45

ओ३म् दोय मन दोय दिल सिंवी न कंथा। दोय मन दोय दिल पुली न पंथा।। दोय मन दोय दिल कही न कथा। दोय मन दोय दिल सुणीं न कथा।। दोय मन दोय दिल पंथ दुहेला।। दोय मन दोय दिल गुरु न चेला। दोय मन दोय दिल बंधी न बेला। दोय मन दोय दिल रब्ब दुहेला।। दोय मन दोय दिल सूई न धागा।। दोय मन दोय दिल भिड़े न भागा।। दोय मन दोय दिल भेव न भेऊ।। दोय मन दोय दिल टेव न टेऊं।। दोय मन दोय दिल केळि

न केला।। दोय मन दोय दिल सुरग न मेला।। रावल जोगी तां तां फिरियो। अण चीन्हैं के चाह्यो।। कांहे काजै दिशावर खेलो। मन हठ सीख न कायों।। थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या। गुरु न चीन्हों रायों।। कण विण कूकस कांय पीसो। निहंचै सरी न कायों।। विण पायचियै पग दुख पावै। अवधू लोहै दुखी स कायों।। पारब्रह्म की सुधि न जांणी। तो नागे जोग न पायों।।४५।।

सबद-46

ओ३म् जिहिं जोगी के मनही मुदरा। तनही कंथा पिंडै

अगन थंभायों। जिहिं जोगी की सेवा कीजै। तूठौ भव जल पार लंघावै।। नाथ कहावै मर मर जावै। से क्यूं नाथ कहावै।। नान्हीं मोटी जीवां जूंणी। निरजत सिरजत फिर फिर पूठा आवै।। हमहीं रावल हमहीं जोगी। हम राजा के रायों।। जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरपां। साचां सूं सत भायो।। पाप न छिपां पुण्य न हारां। करां न करतब लावां बारूं।। जीव तड़ै को रिजक न मेटू। मूवा परहथ सारूं।। दौरै भिसत विचालै ऊभा मिलिया काम सवारूं।।४६।।

सबद-47

ओ३म् काया कंथा मन जो गूंटो। सींगी सास उसासूं।। मन मृग राखलै करि कृषांणी। यूं म्हे भया उदासूं।। हमहीं जोगी हमहीं जतीं। हमहीं सती हमहीं राख बा चीतूं।। पंच पटण नव थांनक साध ले। आद नाथ के भक्तूं।।४७।।

सबद-48

ओ३म् लखमण लखमण न करि आयसां। म्हारे साधां पड़ै बिराऊं।। लखमण सो जिन लंका लीवी रावंण

मार्‌यो। ऐसो कीयो संगरामू।। लखमण तीन भुवण को राजा।। तेरे एक न गांऊं।। लखमण कै तो लख चौरासी जीयां जूणी। तेरे एक न जीऊं।। लखमण तो गुणवंतो जोगी। तेरैं बाद विराऊं। लखमण का तो लखण नाहीं। शींस किसी बिध नाऊं।।४८।।

सबद-49

ओ३म् अवधू अजरा जारि ले। अमरा राखि ले। राखि ले विन्द की धारणा।। पताल का पांणी आकाश कूं चढ़ायले। भेंटले गुरु का दरसणां।।४९।।

सबद-50

ओ३म् तइया सांसू तइया मांसू। तइया देह दमोई।। उत्तम मध्यम क्यूं जाणीजै? बिबरस देखो लोई।। जांकै बाद बिराम बिरासों सांसो सरसा भोला चालै। तांहकै भीतर छोत लकोई।। जांकै बाद बिराम बिरांसो सांसो भोलो भागो। ताके मूले छोत न होई।। दिल दिल आप खुदायबंद जाग्यो। सब दिल जाग्यो सोई।। जो जिंदो हज काबै जाग्यो। थल सिर जाग्यो सोई॥ नाम विसन कै मुसकल घातै। ते काफर सैतानी।। हिंदू होय कर तीरथ

धोकै।। पिंड भरावैं। तेपण रह्या इवांणी।। जोगी होय कै मूंड मुंडावै कान चिरावै। गोरख हटड़ी धोकै। तेपण रह्या इवांणी।। तुरकी होय हज काबो धोके। भूला मुसलमांणी।। के के पुरूष अवर जागैला। थल जाग्यो निज बाणी। जिहिं कै नादे वेदे शीले सबदे। लखणे अंत न पारूं।। अंजण मांहि निरंजण आछै। सो गुरु लखमण कंवारूं।।५०।।

सबद-51

ओ३म् सप्त पताले भुंय अंतर अंतर राखिलो। म्हे अटला अटलूं।। अलाह अलेख अडाल अजूंनी शिंभू।

पवण अधारी पिंड जलूं।। काया भीतर माया आछै। माया भीतर दया आछै। दया भीतर छाया जिहिंकै। छाया भीतर बिंब फलूं।। पूरक पूरि पूरिले पौण। भूख नहीं अंन्न जीमत कौंण।।५१।।

सबद-52

ओ३म् मोह मण्डप थाप थापि ले। राखि राखि ले। अधरा धरूं आदेस बेसूं।। ते नरेसूं। ते नरां अपरं पारूं।। रण मध्ये से नर रहियों। ते नरा अडरा डरूं।। ज्ञान खड़गूं जथा हाथे। कूंण होयसी हमारा रिपूं।।५२।।

सबद-53

ओ३म् गुरु हीरा बिणजै लेहम लेहूं। गुरु नै दोष न देणां। पवणां पांणीं जमीं मेहूं। भार अठारैं परवत रेहूं।। सूरज जोती परै परेरै। एती गुरु कै शरणै।। केती पवली अरू जल बिम्बा। नवसै नदी निवासी नाला सायर एती जरणा।। कोड़ निनांणवै राजा भोगी। गुरु कै आखर कारण जोगी।। माया राणी राज तजीलो। गुरु भेटीलो जोग संझीलो। पिंडा देख न झुरणा।। कर कृसांणीं विफायत संठो। जो जो जीव पिंडै नीसरणा।। आदै पहलू घड़ी अढाई। सुरगे पहुंता हिरणी

हिरणां।। सुरां पुन्हा तेतीसां मेलो। जे जीवन्ता मरणों।। के के जीव कुजीव कुधात कलोतर बांणी। बादींलो हंकारी लो।। वै भार घणा ले मरणो।। मिनखा रै तैं सूतै सोयो खूल्है खोयो। जड़ पाहंण संसार बिगोयौ।। निरफल खोड़ि भिरांति भूला। आसं किसी जां मरणो।। बेसाही अंध पड़्यो गल फंध। लियो गल बंध गुरु बरजंतै।। हेलै श्याम सुन्दर कै टोटै। पारस दुस्तर तरणो। निहंचै छेह पड़े लो पालो।। गोवल बास जू करणो।। गोवल वास कमाय ले जिवड़ा। सो सुरगा पुर लहंणा।।५३।।

सबद-54

ओ३म् अरण विवांणे रै रवि भांणै देव दिवांणे। विस्नु पुराणे।। बिंबा बांणे सूर उगाणे। विस्नु विवाणे किसन पुरांणे। कायं झंख्यो तै आल पिराणी। सुर नर तणीं सबेरूं। इंडो फूटो बेला बरती। ताछै हुई बेर अबेरूं।। मेरे परै सो जोयण बिंबा लोयण। पुरूष भलो निज बांणी।। बांकी म्हारी एका जोती। मनसा सास विवांणी। को अचारी अचारे लेणा। संजमे शीलै सहज पतीना।। तिहिं अचारी नै चीन्हत कौण। जांकी सहजे चूकै आवागुवण।।५४।।

सबद–55

ओ३म् रिणघटियै कै खोज फिरन्ता। सुण सेवन्ता खोज हसती को पायो।। लूंकड़िये कै खोज फिरंता सुण सेवन्ता खोज सुरह को पायो।। मोथड़ियै कै गूंढ खणंता सुण सेवन्ता। लाधो थान सुथानो।। रांघड़िये को घाट घड़न्ता सुण सेवन्ता। कंचण सोनो डायों।। हसती चड़न्ता गेंवर गुड़न्ता। सुणहीं सुणहां भूंकत कायों।।५५।।

सबद–56

ओ३म् कुपातर कू दान जु दीयो। जाणै रैंण अंधेरी

चोर जु लीयो।। चोर जु लेकर भाखर चढ़ियो। कह जिवड़ा तैं कैनैं दीयों।। दान सुपाते बीज सुखेते। इमरत फूल फलीजै।। काया कसौटी मन जो गूंटो। जरणां ढाकंण दीजै।। थोड़े माहिं थोड़ेरो दींजै। होते नाहि न कीजै।। जोय जोय नाम विसन के बीजै। अनन्त गुणा लिख लीजै।।५६।।

सबद–57

ओ३म् अंति बल दानो सबै सिनानो। गऊ कोड़ि जे तींरथां दानो। बोहत करैं आचारूं।। ते पणि जोय जोय पार न पायो। भाग परापति सारूं। घट ऊंधै बरषत बहु मेहा।

नीर थियों पणि ठालूं। को होयसीं राजा दरजोधन सो। विसनु सभा मह लाणो।। तिणहीं तो जोय जोय पार न पायो।। अध विच रहीयों ठालूँ।। जपिया तपिया पोह विणि खपिया। खपि खपि गया इवांणीं।। तेऊ पार पहूंता नाही। ताकी धोती रही असमाणी।।५७।।

सबद–58

ओ३म् तउवा मांण दरजोधन माण्यां। अवर भी मांणत माणूं।। तउवा दान जू किसनी माया। अवर भी फूलत दानो। तउवा जांण जू सहंसर बूझ्या अवर भी बूझत जाणो।।

तउवा बाण जूं सीता कारण लछमण खैच्या। अवर भी खैंचत बाणौ।। जती तपी तकपीर रिखेसर। तोल रह्या शैतानो।। तिण किण खैंच न सके। शिंभु तणी कमाणू।। तेऊ पार पहूंता नाहीं। ते कीयो आपो भांणो।। तेऊ पार पहूंता नाहीं। ताकीं धोती रही असमाणो।। बारां काजै हरकति आई। अधबिच मांड्यो थांणो।। नारिसिंघ नर नराज नरवो। सुरा ज सुरवो।। नरां नरपति। सुरा सुरपति। ज्ञान न रिंदो। बहु गुण चिन्दो। पहलू पहराजा आप पतलीयो। दूजा काजैं काम बिटलीयो।। खेत मुक्त ले पंच करोड़ी।। सो पहराजा

गुरु की बाचा बहियों।। ताका शिखर अपारूं।। तांहको तो बैकुंठे वासौ। रतन काया दे सूंप्या छलत भण्डारूं।। तेऊ तो उरवारे थांणो। अई अमांणो। तत समाणो। बहु परमाणो।। पार पहूंचण हारा। लंका के नर शूर संग्रामे घणा बिरांमे।। काले कांने भला तिकंट। पहलै झूझ्या बाबर झंट।। पड़ै ताल समंदा पारी। तेऊ रहीया लंकदवारी। खेत मुक्तले सात किरोड़ी। परसुरांम के हुकम जे मूवां।। से तो किसन पियारा। तांहको तो बैकुंठे बासो। रतन काया दे सौंप्या छलत भंडारूं। तेऊ तो उरवारे थाणो।। अई अमाणो। पार पहूंचण हारा।।

काफर खानो बुद्धि भराड़ो। खेत मुक्त ले नव करोड़ी राव दहूठल।। सेतों किसन पियारा। तांहकों तों बैकुण्ठे वासों। रतन काया दे सौंप्या छलत भंडारूं। तेऊ तों उरवारे थाणों।। अई अमाणो बहू परमाणों। पार पहूंचन हारा।। बारा काजै हरकति आई। ताछै बहुत भई कसवारूं।।५८।।

सबद-59

ओ३म् पढ़ि कागल वेदूं शासतर सबदूं। भूला भूले झंख्या आलूं।। अहनिश आव घटंती जावै। तेरा सास सबी कसवारूं।। कइया चन्दा कइया सूरूं। कइया काल बजावंत

तूरूं।। ऊरधक चन्दा निरधक सूरूं। सुन घटि काल बजावत तूरूं।। ताछै बहुत भई कसवारूं। रगत स बिन्दु परहस निन्दू। आप सहै तेपण बूझे नही गंवारूं।।५९।।

सबद-60

ओ३म् एक दुख लक्ष्मण बंधू हइयों। एक दुख बूढै घर तरणी अइयों।। एक दुख बालक की मां मुइयों। एक दुख औछै को जमवारूं।। एक दुख तूटै सैं व्यवहारूं। तेरे लक्षणे अन्त न पारूं।। सहैन शक्ति भारू। कै तैं परशुराम का धनुष जे पइयो।। कैतैं दाव कुदाव न जाण्यो भइयूं।

लछमण बाण जे दहशिर हइयों। एतो झूझ हमें नहीं जाण्यो। जे कोई जाणै हमारा नाऊं।। तो लछमण ले बैकुण्ठे जाऊं। तो बिणि ऊभा पह परधानो।। तो बिणि सूनां त्रिभुवण थानो। कहा हुओ जे लंका लइयो।। कहा हुवौ जे रावण हइयों। कहा हुवौ जे सीता अइयों।। कहा करूं गुणवन्ता भइयों। खलि कै साटै हीरा गुइयो।।६०।।

सबद-61

ओ३म् कै तैं कारण किरिया चूक्यौ। कै तै सूरज सांम्हौ थूक्यौ।। कै तै उभै कांसा मांज्या। कै तैं छान

तिणूका खैच्या।। कै तै बांभण निवत बहोड्या। कै तैं आवा कोरंभ चोर्‌या। कै तै बाडी का बन फल तोड़्या। कै तै जोगी का खप्पर फोड़्या।। कै तैं बांभण का तागा तोड्या। कै तैं बैर बिरोध धन लोड्या।। कै तैं सूवा गाय का बच्छ बिछोड्या। कै तैं चरती पिवती गऊ बिडारी।। कै तैं हरी पराई नारी। कै तै सगा सहोदर मार्‌या।। कै तैं तिरिया शिर खड्ग उभारया। कै तैं फिरतैं दांतण कियौ।। कै तै रण मैं जाय दौं दीयो। कै तैं वाटि कूटि धंन लीयो। किसे सरापे लछमण हइयूं।।६१।।

सबद-62

ओ३म् ना मैं कारण किरिया चूक्यौ। ना मैं सूरज साम्हौ थूक्यो।। ना मैं ऊभै कांसा मांज्या। ना मैं छांनि तिणूका खैच्या।। ना मैं ब्राह्मण निवत बहोड्या। ना मैं आवा कोरंभ चोर्‌या। ना मैं बाड़ी का बन फल तोड़्या। ना मैं जोगी का खप्पर फोड्या।। ना मैं बाभंण का तागा तोड्या। ना मैं बैर बिरोध धन लोड्या।। ना मैं सूवा गाय का बच्छ बिछोड्या। ना मैं चरती पिवती गऊ बिडारी।। ना मैं हरी पराई नारी। ना मैं सगा सहोदर मार्‌या।। ना मैं तिरिया सिर

खड़्ग उभार्‌या। ना मैं फिरतै दांतंण कियो।। ना मैं रण मैं जाय दौं दीयों।। ना मैं वाटि कूटि धन लीयो।। एक जू औगुंण रामैं कीयों।। अण हुंतो मिरघो मारण गइयो।। दूजो औगुण रामै कीयो। एको दोष अदोषां दीयों।। बनखंड मां जद साथरि सोइयों। जदि को दोष तदो को होइयों।।६२।।

सबद-63

ओ३म् आतर पातर राही रूखमण। मेल्हा मंदिर भोयो।। गढ़ सोवनां तेपण मेल्हा। रहा छड़ा सी जोयों।। रात पड़ंता पाला भी जाग्या। दिवस तपंता सूरू।। ऊन्हा

ठाढा पवणा भी जाग्या। घण बरसंता नीरूं।। दुनीतणा औचाट भी जाग्या। के के नुगरा देता गाल गहीरूं। जिहिं तन ऊना ओढण ओंढां। तिहिं ओढंता चीरूं।। जां हाथे जप माली जपां। तहां जपंता हीरूं।। बारा काजै पड्यो बिछोहो। संभल संभल झूरूं। राघो सीता गणवंत पाखों। कवण बंधावत धीरूं।। मागर मणीयां कांच कथीरूं। हीरस हीरा हीरूं।। विखा पटंतर पड़ता आया। पुरस पूरा पूरूं।। जे रिण राहे सूर गहीजै। तो सुरज सुरा सूरूं।। दुखिया है जे सुखिया होयसैं। करिस्यै राज गहीरूं।। महा अंगीठी बिरखा

न ओल्हो। जेठ न ठंडा नीरूं।। पिलंग न पोढण। सेज न सोवण कंठ रूलंता हीरूं।। इतना मोह न माने शिंभु। तहीं तहीं सूसीरूं।। घोड़ाचौली बालगुदाई। श्रीराम का भाई। गुरु की बाचा बहियों।। राघौं सीता गणवंत पाखो। दुःख-सुख कांसू कहियों।।६३।।

सबद-64

ओ३म् मैं करि भूला मांड पिराणी। काचै कन्ध अगाजूं।। काचा कंध गले गल जायसैं। बीखर जैला राजूं।। गड़ बड़ गाजा कांय बिबाजा। कण बिण कूकस

कांय लेणां। कांय बोलो मुख ताजों।। भरमी बादीं अति अहंकारी। लावत यारी। पशुवां पड़ै भिरान्ति।। जीव विणासै लाहै कारणै। लोभ सवारथ खायबा खाज अखाजों।। जो अंति काले ले जम काले तेपण खीणा। जिहिं का लंका गढ़ था राजों।। बिणि हस्ती पाखर बिणि गज गुड़ीयों। बिणि ढोंला डूमां लाकड़ीयो।। जाकै परसण बाजा बाजै। सो अपरं पर कांय न जंपो हिंदू मुसलमानों।। डर डर जीव कै काजैं। रावां रंका राजा रांवां।। रावत राजा खाना खोजां। मीरां मुलकां घंघ फकीरां। घंघा गुरवां सुर नर

देवां।। तिमर जू लंगा। आयसां जोयसां।। साह पिरोहितां। मिसरही वियासां रूंखां बिरखां।। आव घंटती। अतरा माहे कूंण विशेषो। मरणत एको माघों।। पशु मुकेरूं लहैन फेरूं। कहै ज मेरूं सभ जुग केरूं।। साचै सूं हर करै घणेरूं। रिण छाणै ज्यूं बीखर जैला। तातैं मेरूं न तेरूं।। विसर गया तै माघूं। रगतूं नातूं सेतूं धातूं। कुमलावै ज्यूं शागू।। जीवर पिंड बिछोवा होयसी। तदि न दाम दुगाणी।। आडन पैंको रती बिसोवो सीझै नाही। ओहपिंड काम न काजूं।। आवत काया ले आयो थो। जातैं सूको जागो।।

आवत खिण एक लाई थी पणि जातैं खिणी न लागो।। भाग परापति करमां रेखां। दरगैं जुबला जुबला माघौं।। बिरखे पान झड़े झड़ जायला। तेपण तई न लागूं।। सेतु दगधूं कंवल ज कलीयों। कुललावै ज्यूं शागूं।। ऋतु बशंती आई। अवर भलेरा शागूं।। भूला तेणि गया रे प्रांणी। तिहि का खोज न माघूं। विसनु-विसनु भण लई न साई। सुर नर संकर को न गाई।। तातैं जंवर बिणि डसीरे भाई। बास बसंतै कीवी न कमाई।। जंवर तणा जमदूत दहैला। तातैं तेरी कहा न बसाई।।६४।।

सबद-65

ओ३म् तउवा जाग जु गोरख जाग्या। निरह निरंजण निरह निरालंब।। जुग छतीसों एकै आसण बैठा बरत्या। अवर भी अबधू जागत जागूं।। तउवा त्यागज ब्रह्मा त्याग्या। अवर भी त्यागत त्यागूं।। तउवा भाग ज ईसर मसतकि। अवर भी मसतक भागूं। तउवा सीर जो ईसर गवरी। अवर भी कहियत सीरूं।। तउवा वीर जो राम लिछमंण। अवर भी कहियत बीरों। तउवा पाघ जो दह सिर बांधी। अवर भी बांधत पाघूं।। तउवा लाज जो सीता लाजी। अवर भी

लाजत लाजूं।। तउवा बाजा रांम बजाया। अवर बजावत बाजूं।। तउवा पाज जो सीता कारण लिछमंण बांधी। अवर भी बांधत पाजूं। तउवा काज जो गणवंत सारया। अवर भी सारत काजूं।। तउवा खाग जो कुम्भकरण महरावण खाग्या। अवर भी खावत खागूं। तउवा राज दरजोधंन माण्या। अवर भी माणत राजूं। तउवा राग ज कन्हड़ बांणी। अवर भी कहिये रागूं।। तउवा माघ तुरंगम तेजी। टटू तणा भी माघूं।। तउवा बागज हंसा टोली बुगला टोली भी बागूं।। तउवा नाग उद्यावल कहिये। गरड़सीया भी नागूं।। तउवा सागज नागर

बेली। कूकर बगरा भी शागूं।। जां जां सैतान करै उफारूं तां तां महत न फलियों।। जुरा जम राकस जुरा जुरीन्दर। कंश केशी चंडरूं।। मधु कीचक हिरणाकस हिरणाकुस। चक्रधर बलदेऊं।। पावत बासुदेवो मंडलीक कांय न जोयबा।। इहिं धर ऊपर रती न रहीबा रांजू।।६५।।

सबद-66

ओ३म् ऊमाज गुमाज पंज गंज यारी। रहिया कुपहीया शैतान की यारी।। शैतान लो भल शैतान लो। शैतान बहो जुग छायो।। शैतान की कुबध्या न खेती। ज्यूं काल मध्ये

कुचीलू।। बे राही बे किरियावन्त। कुमती दौरै जायसैं। शैतानी लोड़त रलियों। जां जां शैतान करै उफारूं। तां तां महत न फलियों।। नील मध्ये कुचील करिबा।। साध संगिणी थूलूं।। पोहप मध्ये परमला जोती। यूं सुरग मध्ये लीलूं।। संसार में उपकार ऐसा। ज्यूं घण बरसंता नीरूं।। संसार में उपकार ऐसा। ज्यूं रूंही मध्ये खीरूं।।६६।।

सबद-67 (*शुक्ल हंस*)

(शुक्ल स्वच्छ अति शुद्ध हंस, पापों का नाश करने वाले श्री विष्णु जम्भेश गुरु द्वारा उच्चरित सबद*)*

ओ३म् श्री गढ़ आल मोत पुर पाटण भुंय नागौरी। म्हे ऊंडे नीरें अवतार लीयो।। अठगी ठंगण। अदगी दागण। अगज्या गंजण। ऊंनथ नाथन।। अनू नवांवण। कांहि को खैंकाल कीयों।। काहीं सुरग मुरादे देस्यां। काहीं दौरै दीयों।। होम करीलो दिन ठावीलौ। सहंस रचीलो छापर नीबी दूणपूरूं।। गांव सुंदरियो छीलै बलदियो। छंदे मन्दे बाल दियो।। अजम्है होता नागौर बाड़े। रैण थंभै गढ़ गागरणो।। कुं कुं कंचण सोरठ मरहठ। तिलंग दीप गढ गागरणो।। गढ़ दिल्ली कँचण अर दूणांवर।। फिर-फिर

दुनीयां परखै लीयों। थटै वांभणियौ अरू गुजरात। आछो जाई सवा लाख मालवै। परबत मांडू मांही ज्ञान कथूं।। खुरासाण गढ लंका भीतर। गूगल खेऊ पैरठयों।। ईडर कोट उजीणी नगरी। काहिंदा सिंध पुरी विसराम लीयों।। कांय रे सायरा गाजै बाजै। घुरै घुरहरै करै इवांणी आप बलूं।। किहिं गुण सायरा मीठो हुंतो। किहिं अवगुण हुओ खार खरूं।। जदि वासिग नेतो मेर मथाणी। समँद बिरोल्यो ढोय ऊरू।। रैणांयर डोहण पांणी पोहण। असुरां बेधी करण छलूं।। दहशिर नै जद वाचा दीन्हीं। तदि म्हे मेल्ही

अनंत छलूं।। दहशिर का दश मस्तक छेद्या। ताणु बाणु लडू कलूं।। सोखा बाणूं एक बखाणूं। जाका बहु परवाणूं। निहचय राखी तास बलूं।। राय विसन से बाद न कीजै। कांय बधारो दैंत्य कूलूं।। म्हेपण म्हेई थेपण थेई। सा पुरिषा की लच्छ कुलूं।। गाजै गुड़कै से क्यूं वीहै। जेझल जाकी संहस फणूं।। मेरे माय न बाप न बहण न भाई।। साख न सैंण न लोक जणो।। बैकुण्ठे विश्वास बिलम्बण।। पार गिरांये मात खिणूं।। विसनु विसनु तू भण रे प्राणी। विसनु भणन्ता अनन्त गुणूं।। सहंसे नावें सहसे ठावें। सहंसे गावै

गाजे बाजे। हीरे नीरे गिगन गहीरे।। चवदा भवणे तिहूं तिरलोके जम्बू दीपे। सपत पयाले।। अई अमाणो। तत समाणो। गुरु फुरमाणो। बहु परवाणो।। अइयां उइयां निरजत सिरजत। नान्ही मोटी जीया जूंणी। एती सास फूरंतै सारूं।। किसनी माया घन बरषंता। म्हे अगिणि गिणूं फूहारूं।। कुण जांणै म्हे देव कुदेवों। कुण जांणै म्हे अलख अभेवों।। कुण जांणै म्हे सुर नर देवों। कुण जांणै म्हारा पहला भेवूं।। कुण जांणै म्हे ग्यानी के ध्यानी। कुण जांणै म्हे केवल ज्ञानी।। कुण जांणै म्हे ब्रह्मज्ञानी।। कुण जांणै म्हे ब्रह्मचारी।। कुण

जांणै म्हे अल्प अहारी। कुण जांणै म्हे पुरूष कै नारी।। कुण जांणै म्हे बाद बिबादी। कुण जांणै म्हे लुब्ध सवादी।। कुण जांणै म्हे जोगी कै भोगी। कुण जांणै म्हे आप संयोगी।। कुण जांणै म्हे भावत भोगी। कुण जांणै म्हे लील पती।। कुण जांणै म्है सूंब क दाता। कुण जांणै म्हे सती कुसती।। आप ही सूंबर आप ही दाता। आप कुसती आपें सती।। नव दाणूँ निरवंश गुमाया कैरव किया फिती फिती।। राम रूप कर राकस हड़िया। बाण कै आगै वनचर जुड़िया। तद म्हें राखी कमल पती।। दया रूप म्हे आप बखांणा। संहार रूप म्हे

आप हती।। सोल्है सहंस नव रंग गोपी। भोलम भालम टोलम टालम।। छोलम छालम।। सहजै राखीलो म्हे कन्हड़ बालो आप जती। छोलबीया म्हे तपी तपेश्वर। छोलम कीया फती फती।। राखण मतां तो पड़दै राखां। ज्यूं दाहै पान बणासपती।।६७।।

सबद-68

ओ३म् वै कंवराई अनंत बधाई। वै कंवराई सुरग बधाई।। यह कंवराई खेह रलाई। दुनीयां रोलै कंवर किसो। कण विणि कूकस रस विणि बाकस। विणि किरिया

परिवार किसो।। अरथूं गरथूं साहण थाटूं। धूंवै का लहलोर जिसो।। सो शारंगधर जपिरे प्राणी। जिहिं जपिये हुवै धरम इसो। चलंण चलंतै बासि बसंतै। जीव जिवंतै काया निवंती।। सास फुरंतै किवी न कमाई। तातैं जंवर बिणि डसी रे भाई।। सुर नर संकर कोउ न गाई। माय न बाप न बहंण न भाई। इंत न मिंत न लोक जणो। जंवर तणा जमदूत दहैला। लेखो लेसी एक जणो।।६८।।

सबद-69

ओ३म् जंवरारे तैं जुग डांडीलो। देह न जीती जांणो।।

माया जाले ले जंम काले। लैणां कवण स माणो। काचै पिंडै किसी बड़ाई। भोलै भूल अयांणो।। म्हां देखतां देव दाणु सुर नर खीणा। बीचि गया बैरांणो। कुंभकरण महरावण होता। अबली जोध अयाणो।। कोट लंका गढ विषमा होता। कांयदा बस गया रावंण रांणो।। नौग्रह रावण पाए बन्ध्या।। तिणि बीह सुर नर शंक भयाणो।। ले जम कालें अंति बुधवंतो। सीता काजि लुंभाणो।। भरमी बादी अंति अहंकारी।। करता गरब गुमानो।। तेऊ तो जम काले खीणां। थीरि न लाधौ थांणो। काचै पिंड अकाज

अफारू। किसो पिराणी माणो।। साबण लाख मजीठ बिगूता। थोथा बाजर घांणो।। दुनिया राचै गाजै बाजै। तामैं कणू न दांणू।। दुनियां के रंग सब कोई राचै।। दीन रचै सो जांणो।। लोही मास बिकारो होयसी। मूर्ख फिरै अयांणो।। मागर मणियां काच कथीरन राचो। कूड़ी दुनी डफाणो।। चलण चलन्तै। जीव जीवन्तै। काया निवन्ती। सास फुरंतै। कांयरे प्राणी विस्नु न जंप्यो। कीयो कन्धै को तांणो।। तिहिं ऊपर आवैला जंवर तणा दल। तास किसो सहनाणौ।। ताकै शीष न ओढण। पाय न पहरण। नैवा

झूल झयाणो।। धणक न बाण न टोप न अंगा। टाटर चुगल चयाणो।। साल सुचंगी घृत सुबासो। पीवण न ठंडा पांणी। सेज न सोवण। पलंग न पोढण। छात न मैड़ी माणो।। न वां दइया न वां मइयां। नागड़ दूत भयाणो।। काचा तोड़ नीकुचा भाखै। अघट घटैं मल माणौ।। धरती अरू असमाण अगोचर। जातैं जीव न देही जाणो।। आवत जावत दीसै नाहीं। साचर जाय अयांणो।। जंवर तणां जमदूत दहैला। मलि बेसैला मांणो।। तातै कलीयर कागा रोलो। सूना रह्या इवांणौ।। आयसां जोयसां भणंता

गुणतां। वार महूर्ता पोथा थोथा। पुस्तक पढिया वेद पुराणों।। भूत परेती कांय जपीजै।। ए पाखण्ड परमाणों। कान्ह दिशावर जेकर चालो। रतन काया ले पार पहूंचो। रहसी आवा जाणो।। तांहि परेरै पार गिराई। तत कै निहचल थाणो।। सो अपरंपर कांय न जंपो। ततकण लहो इमाणो।। भल मूल सींचो रे प्राणी। ज्यूं तरवर मेलत डालूं।। जइया मूल न सींच्यो। तो जामण मरण बिगोवो।। अहनिश करणी थीर न रहिबा। न बंच्यो जम कालूं।। को को भल मूल सींची लो। भल तंत बूझीलो।।

जा जीवण की विध जाणी। जीव तड़ा कछु लाहो होसी। मूवा न आवत हांणी।।६९।।

सबद-70

ओ३म् हक हलालूं हक साच किसनौ। सुकृत अहल्यो न जाई।। भल बाहीलो भल बीजीलो। पवणा बाड़ बलाई।। जीव कै काजै खड़ो ज खेती। तामैं लै रखवालो रे भाई।। दैतानी शैतानी फिरैला। तेरी मत मोरा चरि जाई।। उन मन मनवा जीव जतन करि। मन राखी लो ठांई।। जीव कै काजै खड़ो ज खेती। बाय दवाय न जाई।। न तहां हिरणी

न तहां हिरणा। न चीन्हों हरि याई।। न तहां मोरा न तहां मोरी। न ऊंदर चर जाई।। कोई गुरु कर ज्ञानी तोड़त मोहा। तेरो मन रखवालोरे भाई। जो आराध्यो राव दहूठल। सो आराधौ रे भाई।।७०।।

सबद-71

ओ३म् धवणा धूजै पाहण पूजै। बे फुरमाई खुदाई।। गुरु चेले कै पाए लागै। देखौ लोग अन्यायी।। काठी किणजो रूपा रेहण। कापड़ माहि छिपाई।। नीचा पड़ पड़ तानैं धोकै। धीरौ रे हरि आई।। बाभंण नाऊं लादण रूड़ा।

बूता नाऊं कूता।। वै अपहानै पोह बतावैं। बैर जगावैं सूता।। भूत परेती जाखा खौंणी। एह पाखंड परवाणो।। बल बल कूकस कांय दलीजै। जामै कणूँ न दाणू।। तेल लीयो खल चोपै जोगी। खलपणि सूंघी बिकाणो।। कालर बीज न बीज पिराणी। थल सिर न कर निवाणो।। नीर गए छीलर कांय सोधो। रीता रह्या इवांणौ।। भवंता ते फिरंता। फिरंता ते भवंता। मड़े मसाणे।। तड़े तटंगे। पड़े पखांणे। हवांतो सिधि न काई।। निज पोह खोज पिराणी।। जे नर दावो छोड्यो मेर चुकाई। राह तेतीसां की जांणी।।७१।।

सबद-72

ओ३म् वेद कुरांण कुमाया जालूं। भूला जीव कु जीव कु जाणी।। बसंदर नाहीं नख हीरूं। धर्म पुरूष सिरजीवै पूरूं।। कलि का मायाजाल फिंटाकरि प्रांणी। गुरु की कलम कुरांण पिछांणी।। दींन गुमान करैलो ठाली। ज्यूं कंण घातै घुंण हांणी।। सांच सिदक शैतान चुकावौ। ज्यूं तिस चुकावै पांणी।। मै नर पूरा सरविण जो हीरा। लैसी जांकै हिदयै लोयण। आंधा रह्या इवांणी।।

निरख लहो नर निरहारी। जिणि चोखंड भीतर खेल पसारी।। जंपो रे जिणि जंपे लाभै। रतन काया ए कहांणी। काही मारूं काहीं तारूं। किरिया बिहूंणा पर हथ सारूं। शील दहूं उबारूं ऊन्है। ए कलि एह कहांणी।। केवल न्यानी थल शिर आयो। परगट खेल पसारी।। कोड़ तेतीसो पोहचावण हारी। ज्यूं छकि आई सारी।।७२।।

सबद-73

ओ३म् हरी कंकेहड़ी मंडप मैड़ी। जहां हमारा वासा।। चार चक नव दीप थरहरै। जो आपो परकासूं।। गुणियां

म्हारा सुगणा चेला। म्हे सुगणा का दासूं।। सुगणा होय सैं सुरगे जास्यैं। नुगरा रहा निरासूं।। जांह का थान सुहाया घर बैकुण्ठे।। जाय संदेसो ल्यायो।। अमियां ठमियां इमृत भोजन। मनसा पांलंग सेझ निहाल बिछायों।। जागो जोवो जोत न खोवो। छल जासी संसारूं।। भणी न भणिबा। सुणीं न सुणिंबा।। कही न कहिबा। खड़ी न खड़िबा।। रे भल किरसाणी। ताकै कर्ण न घातो हेलो।। कलीकाल जुग बरते जैंलो तातै नही सुरां नरां देवां सूं मेलो।।७३।।

सबद-74

ओ३म् कड़वा मीठा भोजन भिख ले। भिख कर देखत खीरूं।। धर आखरड़ी साथर सोवण। ओढण ऊंना चीरूं।। सहजे सोवण पोह का जागण। जे मन रहिबा थीरूं।। सुरग पहेली सांभल जिवड़ा। पोह उतरबा तीरूं।।७४।।

सबद-75

ओ३म् जोगी रे तूं जुगत पिछांणी। काजी रे तू कलम कुरांणी।। गऊ बिणासो कांहे तानी। राम रजा क्यूं दीन्हीं दांनी।। कान्ह चराई रनबे वांनी। निरगुण रूप हमें पतियानीं।।

थल सिर रह्या अगोचर बांणी। ध्याय रे मुंडिया पर दांनी। फीटा रे अण होता तांनी। अलख लेखो लेसी जांनी।।७५।।

सबद-76

ओ३म् तन मन धोइये संजम हुइये। हरख न खोइये।। ज्यूं ज्यूं दुनिया करै खुवारी। त्यूं त्यूं किरिया पूरी।। मुग्धां सेती यूं टल चालो। ज्यूं खडकै पासि धनूंरी।।७६।।

सबद-77

ओ३म् भूला लो भल भूला लो। भूला भूल न भूलूं।। जिहिं ठूंठडिये पान न होता। ते क्यूं चाहत फूलूं।।

को को कपूर घूंटीलो। विणि घूंटी नहीं जाणी।। सतगुरु होयबा सहजे चीन्हबा। जाचंध आल बखांणी।। ओछी किरिया आवै फिरियां। भिरांति भिसत न जाई।। अन्त खुदायबंद लेखो लेसी। पर चीन्हों नहीं लौकाई।। कण बिण कूकस रस बिण बाकस। बिण किरिया परिवारूं।। हरि बिण देहरै जांण न पावै।। अम्बाराय दवारूं।।७७।।

सबद-78

ओ३म् नवै पोलि नवै दरवाजा। अहूंठ कोडरूं रायजड़ी।। कांयरे सींचो बनमाली। इंहि बाड़ी तो भेल

पड़सी।। सुबचन बोल सदा सुहलाली। नाम विसनु कौ हरे सुणो।। घण तण गड़बड़ कायों वायों। निज मारग तो बिरला कायों।। निज पोह पाखो पार असी पर। जाण म गाहि म गाहयो गूंणो।। श्रीराम में मति थोड़ी। जोय जोय कण विण कूकस कायों लेणो।।७८।।

सबद-79

ओ३म् बारा पोल नवै दरसाजी। राय अथरगढ थीरूं।। इंणि गढ कोई थीर न रहिबा। निहचै चाल गया गुरु पीरूं।।७९।।

सबद-80

ओ३म् जे म्हां सूता रैण बिहावै। तो बरतै बिम्बा बारूं।। चन्द भी लाजै सूर भी लाजै। लाजै धर गैणारूं।। पवणा पांणी एपण लाजै। लाजै बणी अठारा भारूं।। सप्त पताल फुंणीदा लाजै। लाजै सागर खारूं।। जंबूदीप का लोइया लाजै। लाजै धवली धारूं।। सिध अरू साधक मुनियर लाजै। लाजै सिरजण हारूं।। सत्तरि लाख असी यर जंपा। भले न आवै तारूं।।८०।।

सबद-81

ओ३म् भल पाखंडी पाखंड मंडा। पहलू का पाप परा छत खंडा।। जां पाखंडी कै नादे वेदे शीले सबदे बाजत पौण।। ता पाखंडी नै चीन्हत कूंण। जांकी सहजै चूकै आवा गूंण।।।८१।।

सबद-82

ओ३म् अलख-अलख तू अलख न लखणा। तेरा अनन्त इलोलूं।। कूंण सी तेरी करणी पूजै। कूंण सैं तिहिं रूप संतूलूं।।८२।।

सबद-83

ओ३म् जो नर घोड़ै चढ़ै पाग न बांधै। ताकी करणी कूंण बिचारूं।। सचियारा होयसै आय मिलसै। करड़ा दोजग खारूं।। जीव तड़े को रिजक न मेटूं। मूवां परहथ सारूं।। हाथ न धोवै पग न पखालै। नाहर सिंघ नर काजूं।। जुग अनंत अनंत बरत्या। म्हे सूंनि मंडल का राजूं।।८३।।

सबद-84

ओ३म् मूंड मुंडायौ मन न मुंडायौ। मूहि अबखल दिल

लोभी।। अन्दर दया नहीं सुरकांने। निंदरा हड़ै कसोभी।। गुरु गति छूटी टोटै पड़ैला। उनकी आव इक पख सातो वै करणी हूंता खूंधा।। असी सहंस नव लाख भंवैला कुंभी दौरे ऊंधा।।८४।।

सबद-85

ओ३म् भोम भली किरसांण भी भला। खेवट करो कमाई।। गुरु प्रसाद काया गढ़ खोजौ। दिल भीतर चोरे न जाई।। थलिये आय सतगुरु परकाश्यो। जोलै पड़ी लोकाई।। एक खिण मांहि तीन भवण म्हे पोखां। जीवां

जूण सवाई।। करण सवों दातार न हूवो। जिणि कंचण बाहू उठाई।। सोई कवीसा कवल नवेड़ी। जिणि सुरह सुबछ दुहाई। मेर सवो कोई केर न देख्यो। सायर जिसीं तलाई।। लंक सरीखो कोट न देख्यो। समंद सरीखी खाई।। दशरथ सौ कोई पिता न देख्यो। देवल देसी माई।। सीत सरीखी तिरिया न देखी। गरब न करीयों काई।। गणवंत सो कोई पायक न देख्यो। भीम जैसी सबलाई।। रावण सो कोई राव न देख्यो। जिण चोहचक आन फिराई।। एक तिरिया कै राहा बेधी। लंका फेर बसाई।। संखा मोहरा

सेतम सेतूं। ताक्यूं बिलगै कांई।। बांभण था ते वेदे भूला। काजी कलम गुमाई।। जोग बिहूंणा जोगी भूला। मुंडीया अकल न काई।। इहिं कलयुग मैं दोय जन भूला। एक पिता एक माई।। बाप जांणै मेरे हलीयो टोरै। कोहर सींचण जाही।। माय जांणै मेरै बहुटल आवै। बाजै बिरद बधाई।। म्हे शिंभू का फुरमाया आया। बैठा तखत रचाई।। दोय भुजडंडे परवत तोलां। फेरां आपण राई।। एक पलक मैं सर्ब संतोषां जीया जूण सवाई।। जूगां-जूगां को जोगी आयो। बैठो आसण धारीं।। हाली पूछै पाली पूछै। यह

कलि पूछण हारी।। थली फिरंतो खिल्हेरी पूछै। मेरी गुमाई छाली।। बांण चहोड़ पारधियो पूछै। किहिं ओगण चूकै चोट हमारी।। रहोरे मूरखां मुग्ध गंवारा। करौ मजूरी पेट भराई।। है है जायौ जीव न घाई। मैड़ी बैठो राजिन्दर पूछै। सांमी जी कती एक आव हमारी।। चाकर पूछै ठाकर पूछै और पूछै कीर कहारी।। सोक दुहागण तेपण पूछै। ले ले हाथ सुपारी।। बांझ तिरिया बहुतेरी पूछै। किसी परापति म्हारी।। त्रेता जुग मैं हीरा विणज्या। द्वापुर गऊ चराई।। वनरावन मैं बंसी बजाई। कलजुग चारीं छाली।। नव खेड़ी

म्हें आगै खेड़ी। दशवैं कालंगे की बारी।। उत्तम देश पसारो मांड्यो। रमण बैठो जुवारी।। एक खंड बैठा नवखंड जींता। को ऐसो लहो जुवारी।।८५।।

सबद-86

ओ३म् जुग जागो जुगजाग पिरांणी। कांय जागंता सोवो।। भलकै बीर बिगोवो होयसी। दुसमण कांय लकोवो।। ले कूंची दरबान बुलावो। दिल ताला दर खोवो।। जंपो रे जिणि जंप्यो जिणीयर। जपसी सो जिणि हारी।। लहि-लहि दाव पड़ंता खेलौ। सुर तेतीसां सारी।।

पवण बंधान काया गढकाची। नीर छलै ज्यूं पारी।। पारी विणसै नीर ढुलैलो। ओ पिंड काम न कारी।। काची काया दिढ़ कर सींचो। ज्यूं माली सींचत बाड़ी।। ले काया बासंदर होमो। ज्यूं ईंधण की भारी।। सूचि सनाने संजमे चालो। पांणी देह पखाली।। गुरु के वचने निंव खिंव चालो। हाथ जपो जपमाली।। वस्तु पियारी खरचो क्यूं नाहीं। किहिं गुण राखो टाली।। खरचे लाहो राखे टोटो। बिबरस जोय निहाली।। घर आगी इत गोवल बासो। कूड़ी आधो चारी।। आज मूवा कल दूसर दिन है। जो कुछ सरै

तो सारी।। पीछै कलीयर कागा रोलो। रहसी कूक पुकारी।। तांण थकै क्यूं हार्‌यो। नाहीं मुरखा अवसर जोला हारी।।८६।।

सबद-87

ओ३म् जिहि का उमग्या समाघूं। तिहिं पंथ के बिरला लागूं।। बीजा चाकर बीरूं। रिण शंख धीरूं।। कबही झूझत रायूं। पासै भाजत भायौं।। तातैं नुगरा झूझ न कीयों।।८७।।

सबद-88

ओ३म् गोरख लौ गोपाल लौ। लाल गंवाल लौ।।

लाल लीलंग देवों। नवखंड प्रथिवी प्रगटियो।। कोई बिरला जाणत म्हारीं। आद मूल का भेवो।।८८।।

सबद-89

ओ३म् उरधक चन्दा निरधक सूरूं। नव लख तारा नेड़ा न दूरूं।। नव लख चन्दा नव लख सूरूं। नव लख धंधू कारूं।। तांह परेरै तेपणि होता। तिहंका करूं बिचारूं।।८९।।

सबद-90

ओ३म् चोईस चेड़ा कालिंग केड़ा। अधिक कलावंत आयसैं।। वै फेर आसण मुकर होय बैसैंला। निगुरा थान

रचायसैं।। जाणंत भूला महा पापी। बहू दुनियां भोलायसैं।। दिल का कूड़ा कुड़ीयारा। उपंग बात चलाय सैं।। गुरु गहणां जो लेवै नाहीं। दशबंध घर बोसायसैं।। आप थापी महापापी। दग्धी परलै जायसैं।। सतगुरु कै बैड़ै न चड़ै। गुर सामी नै भाय सैं।। मंत्र बेलु ऋध सिध कर सैं।। दे दे कार चलायसैं।। काठ का घोड़ा निरजीवता सरजीत कर सैं। तांनै दाल चरायसैं। अधर आसण मांड बैसैंला। मूवा मड़ा हंसाय सैं।। जां जां पवण आसण। पाणी आसण चंद आसण। सूर आसण। गुरु आसण संभराथले।। कहै सतगुरु भूलि मति जाइयो। पड़ोला अभै दोजगे।।९०।।

सबद-91

ओ३म् छंदे मंदे बालक बुद्धे। कूड़े कपटे ऋधि न सिद्धे।। मेरे गुरु जो दीन्हीं शिख्या। सर्व अलिंगण फेरी दीख्या।। जाण अजांण बहींया जब जब। सर्व अलिंगण मेटे तब तब।। ममता हस्ती बांध्या काल। काल पर काले पसरत डाल।। ध्यान न डोले मन न टले। अहनिश ब्रह्म ज्ञान उच्चरै। काया पत नगरी मन पत राजा। पञ्च आत्मा परिवारूं।। है कोई आछै मही मंडल सूरा। मनराय सूं झूझ रचायले।। अथगा थगायले। अवसा बसायले। अनबे माघ

पाल ले।। सत-सत भाषत गुरु रायों। जरा मरण भो भागूं।।९१।।

सबद-92

ओ३म् काया कोट पवन कुट वाली। कुकरम कुलफ बणायो।। माया जाल भरम का संकल। बहु जग रहीया थायों।। पढ़ि वेद कुरांण कुमाया जालों। दंत कथा जुग थायो।। सिध साधक को एक मतो। जिणि जीवत मुक्त दिढ़ायों।। जुगां जुगां को जोगी आयों।। सतगुरु सिद्ध बतायो।। सहज सिनानी केवल न्यांनी ब्रह्मगियानी। सुकृत

अहल्यौ न जाई।। क्यूं क्यूं भणतां। क्यूं क्यूं सुणंतां। समझ बिना कुछ सिद्धि न पाई।।९२।।

सबद-93

ओ३म् आद सबद अनाहद बांणी। चवदै भवण रह्या छलि पाणी।। जिहिं पाणी सूं इंड ऊपना। उपना ब्रह्मा अरू त्रिपुरारी।।९३।।

सबद-94

ओ३म् सहंस नाम सांईभल शिंभु। म्हे उपनां आदि मुरारी।। जदि मैं रह्यां निरालंभ होकर। उतपति धंधुकारी।।

ना मेरै मायन ना मेरै बापन। मैं अपणी काया आप संवारी।। जुग छतीसूं शून्यहि बरत्या। सतजुग माहीं सिरजी सारी।। ब्रह्मा इन्द्र सकल जग थरप्या। दीन्ही करामात केतीवारी।। चन्द सूर दोय साखी थरप्या। पवन पवनेश्वर पवन अधारी।। तदम्हे रूप कीयो मैणावतीयो। सत्यव्रत कूं ज्ञान उचारीं। तदम्हे रूप रच्यो कामठीयो। तेतीसों कोड़ हंकारी।। जदि मैं रूप रच्यो वाराहीं। धरती दाढ़ चढ़ाई सारी।। नरसिंघ रूप धर हिरण्यकश्यप मार्‌यो। पहलादो रहियो शरण हमारी।। बावन होय बलिराव चितायो। तीन पैंड कीवीं

धरसारी।। परसुराम होय छतरांयण साध्या। गरभ न छूटी नारी।। श्री राम शिर मोड़ बंधायो। सीता के अहंकारी।। कन्हड़ होय कर बंसी बजाई गऊ चराई।। धरती छेदी। काली नाथ्यो। असुर मारि किया खैंकारी।। बुद्ध रूप गया सु रमा र्‌यो। काफर मारि किया बेगारी।। पंथ चलायो राह दिखायो। नौविरीया विजै हुई हमारीं। शेष जंभराय आप अपरंपर। अवल दिन से कहियो।। जांभा गोरख गुरु अपारा।। काजी मुल्ला पढ़िया पंडित। निंदा करै गिवारा।। दोजक छोड़ि भिस्त जे चाहो। तो कहिया करो हमारा।।

इन्द्रपुरी बैकुण्ठे बासो। तो पावो मोखहिं दवारा।।९४।।

सबद-95

ओ३म् बाद बिवाद फिटाकरि प्राणी। छाडो मनहठ मन का भांणौ।। कांही कै मन भयौ अंधेरौ। कांही सूर उगाणौ।। नुगरा कै मन भयो अंधेरौ। सुगरा सूर उगाणो।। चलणभि रहीया लोयण झुरीया। पिंजर पड्यौ पुराणौ।। बेटा बेटी बहण रू भाई। सबसूं भयो अभाणौ। तेल लीयो खल चोपै जोगी। रीतो रहीयो घांणो।। हंस उडाणो पंथ बिलब्यो। कीयो दूर पयांणो।। आगै सुरनर लेखो मांगै।

कहि जीवड़ा के करण कमाणौ।। जीवड़ै नै पाछो सूझण लागौ। सुकरत नै पछताणौ।।९५।।

सबद-96

ओ३म् सुंणि गुंणवंता सुंणि बुधवंता। मेरी ओपति आदि लुहारूं।। भाठी अंदर लोह तपीलौ। तंतक सोनो घड़ै कसारूं।। मेरी मनसा अहरण नाद हथोड़ो। शशीयर सूर तपीलौ।। पवण अधारीं खालूं। जै थे गुरु का सबद मानीलौ। लंघिबा भव जल पारूं।। आसण छोड़ि सुखासण बैठो।। जुग-जुग जीवै जंभ लुहारूं।।९६।।

सबद-97

ओ३म् विसनु-विसनु तू भण रे प्राणी। जो मन मानै रे भाई।। दिन का भूला रात न चेता। कांय पड़ि सूता आस किसी मन थाई।। तेरी कुड़ि काची लगवाड़ घणो छै। कुशल किसी मन भाई।। हिरदै नाम विसनु को जंपौ। हाथे करो टवाई।। हरि परिहर की आंण न मानी। भूला भूल जपी महमाई।। पाहण प्रीत फिटा करि प्राणी। गुरु बिन मुक्ति न जाई।। पंच करोड़ी ले पहलादो तरियो। जिण खरतर करी कमाई। सात करोड़ी ले राजा हरिचंद तरियो।

तारादे रोहिताश हरिचन्द हाटौहाट बिकाई।। नव करोड़ी राव दहूठल ले तरियो। धन-धन कुन्तादे माई।। बारा करोड़ी समावण आयो। पहराजा सूं वाचा कवल जु थाई।। किसकी नारी बस्त पियारी। किसका बहण रू भाई।। भूली दुनियां मरि मरि जावै। नां चीन्हों सुरराई।। पांहण नाऊं लोहा सक्ता। निगुरा चीन्हत कांई।।९७।।

सबद-98

ओ३म् जिहि गुरु कै खिणहीं ताऊं खिणहीं सीऊं। खिणही पवंणा खिणहीं पांणी। खिणहीं मेघ मंडाणौ।।

किसन करंता बार न होई। थल सिर नीर निवाणो।। भूला प्राणी विस्नु जंपो रे। ज्यूं मौत टलै जिरवाणो।। भीगा है पणि भेद्या नाहीं। पांणी मांहि पखाणौ।। जीवत मरो रे जीवत मरो। जिण जीवण की बिध जांणी।। जे कोई आवै हो हो कर। आप जै हुईये पांणी।। जाकै बहुती नवणी बहुती खवणी। बहुती क्रिया समाणीं।। जाकी तो निज निर्मल काया। जोय जोय देखो ले चढ़ियो अस्माणी।। यह मढ देवल मूल न जोयबा। निज कर जंपो पिराणी।। अनन्त रूप जोवो सुभ्यागत। जिहिंका खोज लहौ सुर बाणी।।

सेतम सेतूं। जेरज जेरूं। इंडस इंडू। अइयालो उरध जे खैणी।।९८।।

सबद-99

ओ३म् साच सही म्हे कूड़ न कहिबा। नैड़ा था पणि दूर न रहीबा।। सदा सन्तोषी सत उपकरणां। म्हे तजिया मान अभिमानूं।। बसि करि पवणां बसि करि पांणी। बसि करि हाट पटण दरवाजौं।। दशे दवारे ताला जड़ीया। जो ऐसा उसताजों।। दशे दवारे ताला कूंची। भीतरि पोलि बणाई।। जो आराध्यो राव दहूठल। सो आराधो रे भाई।।

जिहिं गुरु कै झुरै न झुरणां खिरै न खिरंणा। बंक तूबंके।। नाल पैनालै। नैंणे नीर न झुरबा। विणि पुल बंध्या बांणो।। तज्या अलिंगण तोड़ी माया। तन लोचन गुण बांणो।। हालीलौ भल पालीलौ सिध पालीलो। खेड़त सूनां राणौ।।९९।।

सबद–100

ओ३म् अर्थूं गर्थूं साहण थाटूं। कूड़ा दीठौ ना ठाटों।। कूड़ी माया जाल न भूलीरे राजेन्द्रं। अलगी रही ओजूं की बाटों।। नवलख दंताला बार करीलो। बार करे कर बंद

करीलो।। बंद करे करि दान करींलो। दान करे करि मन फूलीलो।। तंत मंत बीर बेताल करीलौ। खायबा खाज अखाजूं।। निरह निरंजण नर निरहारी। तऊ न मिलबा झंझा भाग अभागूं।।१००।।

सबद–101

ओ३म् नितही मावस नित संकरांति। नितही नवग्रह वैसैं पांति।। नितही गंग हिलोले जाय। सतगुरु चीन्है सहजै न्हाय।। निरमल पांणी निरमल घाट। निरमल धोबी मांड्यो पाट।। जेयो धोबी जाणै धोय। घर में मैला वसत्र रहै न

कोय।। एक मन एक चित साबण लावै। पहरंतो गाहक अति सुख पावै।। ऊंचै नीचै करै पसारा। नाहीं दूजै का संचारा। तिल मैं तेल पहुप मैं बास। पांच तंत मैं लियो प्रकाश।। बिजली कै चमकै आवै जाय। सहज शून्य मैं रहै समाय।। नैं वो गावै नै वो गवावै। सुरगे जातौ बार न लावै।। सतगुरु ऐसा तंत बतावै। जुगि जुगि जीवै बहुरि न आवै।।१०१।।

सबद–102

ओ३म् विस्नु–विस्नु भंणि अजर जरीजै। धर्म हुवै

पापां छूटीजै।। हरि पर हरि कौ नाम जपीजै। हरियालो हरि आण हरूं। हरी नारायण देव नरूं।। आसा सास निरास भईलौ। पाईलौ मोख दवार खिणूं।।१०२।।

सबद–103

ओ३म् देखि अदेख्या सुण्या अणसुण्या। खिमारूप तप कीजै।। थोड़ै माहि थोड़ेरो दीजै। होते नाहिं न कीजै।। किसनी मया तिहूं लोका साखी। अमृत फूल फलीजै।। जोय जोय नांव विसन के दीजै। अनन्त गुणा लिख लीजै।।१०३।।

सबद–104

ओ३म् कंचण दानूं कछू न मानूं। कापड़ दानू कछू न मांनू।। चोपड़ दानू कछू न मानूं। पाट पटंबर दानू कछू न मानू।। पंच लाख तुरंगम दानू कछू न मानूं। हस्ती दानू कछू न मानूं। तिरिया दानू कछू न मानूं। मानू एक सुचील सिनानूं।।१०४।।

सबद–105

ओ३म् आप अलेख उपन्ना सिंभू। निरह निरंजण धंधूकारूं।। आपै आप हुआ अपरंपर। नै तद चन्दा नै तद

सूरूं।। पवंण न पांणी धरती आकाश न थीयौं।। नातद मास न वरस न घड़ी न पहरूं। धूप न छाया ताव न सीयौं।। न त्रिलोक न तारामंडल। मेघ न माला वरसा थीयों।। ना तद जोग न नखतर तिथि न बारसीयो। ना तद चवदश पून्यो मावसीयो।। नै तद समंद न सागर न गिरि न पर्वत। ना धौलागिर मेर थींयों।। ना तद हाट न बाट न कोट न कसबा। बिणज न बाखर लाभ थीयौं।। ए छत धार बड़े सुलतानो। रावण राणा ये दिवांणां हिन्दू मुसलमानू।। दोय पंथ नाहीं जूवा जूवा। ना तद कामन करसण जोगन दरसण।। तीर्थ वासी ए मसवासी। ना तदि होता जपिया

तपिया। न खच्चर हींवर बाज थीयों।। ना तदि सूर न वीर न खड़ग न खत्री।। रिण संग्राम नै जूझ थीयों।। ना तदि सिंह न स्यावज मिरग पंखेरूं। हंस न मोरा लेलै सूवो।। रंग न रसना कापड़ चोपड़। गोहूं चावल भोग थीयों।। माय न बाप न बहण न भाई। नातदि होता पूत धीयों।। सास न सबदूं जीव न पिंडूं ना तदि होता पुरूष त्रियों।। पाप न पुण्य न सती कुसती। ना तदि होती मया न दया।। आपै आप ऊपनां शिम्भू। निरह निरंजण धन्धू कारूं।। आपौ आप हुवा अपरंपर। हे राजेन्द्र लेह विचारूं।।१०५।।

सबद–106

ओ३म् सुणिरे काजी सुणिरे मुल्ला सुणियो लोग लुगाई।। नर निरहारी एकल वाई। जिणि यो राह फुरमाई।। जोर जरब करद जे छाडौ। तो कलमा नाम खुदाई।। जिनकै साच सिदक इमान सलामत। जिणि आ भिस्त उपाई।।१०६।।

सबद–107

ओ३म् सहजे शीले सेज बिछाई। उनमन रह्या उदासूं।। जुगे जुगन्तर भवे भवन्तर। कहूं कहांणी कासूं।। रवि ऊगै

जब उल्लू अन्धा। दुनियां भया उजासूं।। सतगुरु मिलियो सतपंथ बतायौ भ्रांत चुकाई। सुगरां भयो बिसवासूं।। जां जां जांण्यौ तहां प्रवाण्यो। सहज समाण्यौं। जिहिं के मन की पूर्गीं आसूं।। जहां गुरु न चीन्हों पंथ न पायौं। तहां गल पड़ी परासूं।।१०७।।

सबद–108

ओ३म् हालीलो भल पालीलो सिध पालीलो। खेड़त सूना राणो।। चन्द सूर दोय बैल रचीलौ। गंग जमन दोय रासी।। सत संतोष दोय बीज बीजीलो। खेती खड़ी

अकासी।। चेतन रावल पहरै बैठे। मृगा खेती चर नहीं जाई।। गुरु प्रसादे केवल ज्ञाने। ब्रह्मज्ञाने सहज सिनाने। यह घरि ऋधि सिधि पाई।।१०८।।

सबद–109

ओ३म् देखत भूली को मनमानै। सेवै बिलोवै बांझ सिनानै।। देखत भूली को मन चेवै। भीतर कोरा बाहर भेवै।। देखत भूली को मन मांनै। हरि परि हरि मिलियो शैताने।। देखत भूली को मन चेवै। आक बखांणै थंदे मेवै।। भूलालो भल भूलालौ। भूला भूलि न भूलूं।। जिहिं

ठूंठड़िये पान न होता। ते क्यूं चाहत फूलूं।।१०९।।

सबद–110

ओ३म् मथुरा नगर की राणी होती। होती पाटमंबदे राणी।। तीरथ वासी जाती लूटे। अति लूटे खुरसाणी।। माणिक मोती हीरा लूट्या। जाय बीलूधा दांणी।। कवले चूकी बचने हारी। जिहिं औगुण ढांचीं ढोवै पांणी।। विस्नु कूं दोष किसो रे प्रांणी। आपे खता कमाणी।।११०।।

सबद–111

ओ३म् खरड़ ओढीजै तूंबा जीमीजैं। सुरहै दुहीजै। कृत

खेत की सींव मैं लीजै।। पीजै ऊंडा नीरूं। सुर नर देवा बंदी खानै। तित उतरीया तीरूं।। भोलंब भालब। टोलम टालम। ज्यूं जाणौ त्यू आण्यो।। मैं बाचा दइ पहलादा सूं सूचेलो गुरु लाजै। कोड़ तेतीसूं बाड़ै दीन्हीं। तिनकी जात पिछाणौ।।१११।।

सबद–112

ओ३म् जांके पंथ का भांजणा। गुरु का नींदणा। सामी का दुसमणा। कुफर ते काफरा।। कुमली कुपातूं कुचिला कुधातूं। हड़ हड़ा भड़ हड़ा। दाणबे दूतबा दाणबे

भूतबा।। राकसा बोकसा। जांका जन्म नहीं पर कर्म चंडालूं।। और कूं जिभै करि आप कूं पोखणां। जिहिंकी रूवा ह लै दीजैसीं। दोरै घुप अंधारौं।। ताणि बे ताणिबा छाणि बे छाणिबा। तोड़ बे तोड़िबा। कूक बे पुकारिबा। जांकी कोई न करिबा सारूं।।११२।।

सबद–113

ओ३म् ईमा मोमणि चीमा गोयम। महंमद फुरमाणि।। उरका फुरका निवाज फरीजां। खासा खबर बिनांणी।। अला रास्ती ईमा मोमिण। मारफत मुल्लाणी।।११३।।

सबद–114

ओ३म् सुरनर तणो सन्देसो आयौ। सांभलीयौ रे जाटो।। चांदणै थकै अंधेरै क्यूं चालो। भूलि गया गुर बाटो।। नीर थकै घट थूल क्यूं राखौ। सबल बिगोवो खाटो।। मागर मणियां क्यूं हाथि बिसाहो। कांय हीरा हाथ उसाटौ।। सुरनर तणो संदेशौ आयो। सांभलियो रे जाटौ।।११४।।

सबद–115

ओ३म् म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियों। मेरा कारण

किरिया देखो।। बिन्दो ब्योहरो ब्योहर विचारो। भूलस नाही लेखों।। नंदिये नीरूं सागर हीरूं। पवणा रूप फिरै परमेसर।। बिंबै बेला निहचल थाघ अथाघूं। उमग्या समाघूं। ते सरवर कित नीरूं।। गहर गंभीरू। खिणि इक सिद्धपुरी विश्राम लियों।। अव जू मंडल भई अवाजूं। म्हे शून्य मंडल का राजूं।।११५।।

सबद–116

ओ३म् आयसां मृगछाला पावड़ी कांय फिरावो। मतूंत आयसां ऊगंतो भांण थंभाऊं।। दोनूं परबत मेर उजागर।

मतूंत अधबिच आण भिडाऊं।। तीन भुवण की राही रूकमणी। मतूंत थल सिर आंण बसांऊं।। नवसै नदी निवासी नाला। मतूंतो थल सिर आणि बहाऊं।। सीत बहोड़ी लंका तोड़ी। ऐसो कियो संग्रामौ।। जां बांणै म्हे रावण मार्यो।। मतूंतो आयसां गढ़ हथणापुर थै आणि दिखाऊं।। जो तू सोने की मृगी कर चलावै। मतूंत घण पांहण बरसाऊं।। मृगछाला पावोड़ी कांय फिरावो। मतूंतो ऊगंतो भांण थंभाऊं।।११६।।

सबद-117

ओ३म् टूका पाया मगर मचाया ज्यूं हंड़ियाया कुत्ता।। जोग जुगत की सार न जाणी। मूंडि मुंडाय बिगूता।। चेला गुरु अपरचै खीणा। मरते मोख न पायो।।११७।।

सबद-118

ओ३म् सुरगा हूंते सिंभू आयौ। कहो कूंणां के काजै।। नर निरहारी एकलवाई। परगट जोत बिराजै।। पहराजा सूं वाचा कीवी। आयौ बारां काजै।। बारां मैं सू एक घटै तो। सू चेलो गुरु लाजै।।११८।।

सबद-119

ओ३म् विसन-विसन तूं भण रे प्राणी। पैंकै लाख उपाजूं।। रतन काया बैकुंठे बासो। तेरा जुरा मरण भय भाजूं।।११९।।

सबद-120

ओ३म् विसन-विसन तू भणिरे प्रांणीं। इस जीवण कै हावै।। तिल-तिल आव घटंती जावै। मरण दिनों दिन आवै।। पालटियो गढ़ कांय न चेतो। घाती रोल भनावै।। गुरु मुख मुरखौ चढै न पोहण। मनमुख भार उठावै।। ज्यूं ज्यूं लाज दुनी की लाजै। त्यूं त्यूं दाब्यो दावै।। भलियो होयसो भली बुध आवै।। बुरियो बुरी कमावै।।१२०।।

अथ कलश पूजा प्रारम्भ

ओं अकलरूप मनसा उपराजी। तामा पांच तत होय राजी।।1।। आकाश वायु तेज जल धरणी। तामां सकल सिष्ट की करणी।।2।। ता समरथ का सुंणो बखांण। सप्तदीप नवखण्ड प्रवाण।।3।। पांच तत मिल इण्ड उपायों। विगस्यो इण्ड धरणि ठहरायों।।4।। इण्डे मध्ये जल उपन्नो। जलमां विसनु रूप ऊपन्नों।। ता विसनु को नाभकंवल बिगसानों। तामां ब्रह्मा बीज ठहरानों।।5।। तां ब्रह्मा की उतपति होई। भांनै घड़ै संवारै सोई।।6।। कुलाल करम करत है सोई। पृथिवी ले खाके तक होई।।7।। आदि कुम्भ जद उत्पन्नों। सदा कुम्भ प्रवर्तते।।8।। कुम्भ की पूजा जे नर करते। तेज काया भौखण्डते।।9।। अलील रूप निरंजणौ। जांके न थे माता न थे पिता न थे कुटुम्ब सहोदरम्।। जे नर करै ताकी सेवा। तांका पाप

दोष ख्यो जायंते।।10।। आदि कुम्भ कंवल की घड़ी। अनादि पुरुष ले आगे धरी।।11।। बैठा ब्रह्मा बैठा इंद। बैठा सहंस कला रवि चंद।।12।। बैठा ईसर दो कर जोड़। बैठा सुर तेतीसां कोड़।।13।। बैठी गङ्गा यमुना सरस्वती। थरपना थापी बालै निरंजण गोरख जती।।14।। सतरै लाख अठाइस हजार सतयुग प्रमाण। सतयुग के पहरे में सोने को घाट। सोने को पाट। सोने को कलश। सोने को टको। पांच क्रोड़या के मुखी गुरु श्री पहलाद कलश थाप्यो। वै ह कलश जो धर्म्म हुवो सो इस कलश हुइयो श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।15।। बारह लाख छयाणवे हजार त्रेता युग प्रमाण। त्रेता युग के पहरे मैं रूपे को घाट। रूपे को पाट। रूपे को कलश। सोने को टको। सात क्रोड़या कै मुखी राजा हरिचंद तारादे रोहितास कलश थाप्यो। वै हे कलश जो ध र्म हुवो सो इस कलश हुइयो श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो

तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।16।। आठ लाख चौसठ हजार द्वापर युग प्रमाण। द्वापर युग के पहरे में तांबे को घाट तांबे को पाट। तांबे को कलश। रूपे को टको। नव क्रोड़या कै मुखी राजा दहूठल कुन्ती माता द्रोपदी पांच पाण्डव। कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म्म हुआ सो इस कलश हुइयो। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।17।। च्यार लाख बत्तीस हजार कलियुग प्रमाण। कलियुग के पहरे में माटी को घाट माटी को पाट। माटी को कलश। तांबै को टको अनन्त क्रोड़या कै मुखी गुरु जम्भेश्वर कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म्म हुआ सो इस कलश हुइयो। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।18।।)

-: इति श्री जम्भेश्वर प्रणीत कलशपूजा सम्पूर्णम् :-

अथ पाहल प्रारम्भ

ओं नमो स्वामी शुभकरतार। निरतार, भवतार, धर्म्म धार पूर्व एक ओंकार।।1।। साधूनां व दर्शणे पुण्ये। सन्मुखे पापनाशणम्।।2।। जनम फिरंता को मिलै। सन्तोषी सुचियार। अपणो सुवारथ ना करै। पर पिण्ड पोखणहार।।3।। पर पिण्ड पोखणहार जीवत मरै। पावै मोख द्वार।।4।। एहस पाहल भाइयो साधे लिवी विचार। एहस पाहल भाइयो थूले मेल्ही हार।।5।। एहस पाहल भाइयो रिषि सिद्धों के काज। एहस पाहल भाइयो ऊधरियो पहराज।।6।। तेतीस कोटि देवाकुली लाधो पाहल बन्द। एहस पाहल भाइयो ऊधरियो हरिचन्द।।7।। पाहल लीन्हीं कुन्ती माता होती करणी सार। साधु एहा भेटिया मिल्यो मोख दीदार।।8।। आओ पांचों

पाण्डवों। गुरु की पाहल ल्योह। पाहल सार न जांणहीं। तिसे पाहल मत द्योह।।9।। पाहल गति गंगा तणी। जेकर जाणै कोय। पाप शरीरां झड़ पड़ै। पुण्य बहुत सा होय।।10।। नेम तलाई नेम जल। नेम के जीमे पाहल। कायम राजा आइयो। बैठो पाव पखाल।।11।। ऋषि थाप्या गति ऊधरै। देता दिये पाहल। वन वन चन्दन न अगरण। सरसर कंवल न फूल।।12।। एका एकी होय जंपो ज्यों भागै भ्रमभूल। अड़सठ तीर्थ कांय फिरो। न इण पाहल सम तूल।।13।। गोवल गोवल को को धवल। सब संता दातार। विष्णु नाम सदा जीम। पाहल एह विचार।।14।। सद्‌गुरु बोले भाइयो। सन्त सिद्ध शुचियार।। मछ की पाहल कच्छ की पाहल। बाराह की पाहल। नरसिंह की पाहल। बावन की पाहल। परसराम की पाहल। राम लछमण

की पाहल। किसन की पाहल। बुद्ध की पाहल। निकलंक की पाहल। जाम्भोजी की पाहल

-: इति श्री जम्भेश्वर प्रणीतम् पाहल समाप्तम् :-

पाहल ग्रहण मन्त्र

ओ३म् शन्नो देवीरभीष्टये
आपोभवन्तु पीतये
शंयोरभिस्रवन्तु नः।।

साधु गुरु मन्त्र

ओं शब्द सोहं आप। अन्तर जपै अजप्या जाप।।

सत्य शब्दले लंघै घाट। बहुरि न आवै योनि वाट।।

परसै विष्णु अमी रस पीवै। जरा न व्यापै जुग जुग जीवै।।

विष्णु मंत्र है प्राणाधार। जो जपै सो उतरै पार।।

ओं विष्णु सोहं विष्णु तत स्वरूपी तारक विष्णुः।।

-0-0-0-

सुगरा मन्त्र

ओम् शब्द गुरु सुरत चेला। पांच तंत में रहै अकेला।।

सहजे जोगी शून्य मां वास। पांच तंत में लियो प्रकाश।।

ना मेरे माई ना मेरे बाप। अलख निरंजण आपही आप।।

गंगा जमना बहै सुरसती। कोई कोई नहावे बिरला जती।।

तारक मन्त्र पार गिराम। गुरु बतायो निश्चय नाम।।

जो कोई सुमिरै उतरै पार। बहुरि न आवै मैली धार।।

-0-0-0-

बालक मन्त्र

ओम् शब्द गुरु देव निरंजन। ता इच्छा ते भये अंजन।।

हरि के हाथ पिता के पिष्ट। विष्णु माया उपजी सिष्ट।।

सप्तधात को उपज्यौ पिंड। नौ दस मास बालो रह्यो अघोर कुंड।।

अरध मुख ता उरध चरण हुतास। हरी कृपा से भया खलास।।

जल से न्हाया त्यागया मल। विष्णु नाम सदा निरमल।।

विष्णु मंत्र कान जल छूवा। गुरु फुरमाण विसनोई हुवा।।

-: इति बालक मन्त्र सम्पूर्णम् :-

विविध प्रकार की उन्नतीस नियम व्याख्या

।। चौपाई ।।

मास एक सूतक तुम मानों। पंचदिवस तक ऋतुमती जानों।।

प्रातरुत्थाय करो सब स्नाना। पालो शील (शौच) संतौष सुजाना।।

दोनों काल की सन्ध्या मानी। मुनि जन गण यह साक्षी बखानी।।

सन्ध्या कर काटो मन मैला। देश विभक्त गहौ पुन शैला।।

सायंकाल विष्णु गुण गाओ। कर आरती परमानन्द पाओ।।

प्रेम सहित सब होम कराओ। पुनः बैकुण्ठ बास सब पाओ।।

अमृत पूत करो सब पाना। समति एक करो मत नाना।।

पूत करो वाणी सुख दायी। विष्णु भजन में होगी सहाई।।

इन्धन छान बीन कर लेना। दृष्टि पूत बिन कहुं नहीं देना।।
क्षमा दया उर में सब धारो। गुरु आज्ञा बिन सब को टारो।।
गुरु जी जान कियो उपदेशा। धारण करो विष्णु आदेशा।।
हेय करो चोरी अरु निन्दा। इन संग मिथ्या जानों धन्धा।।
इन तीनों को बरजो भाई। वाद विवाद न करियो काई।।
अमावस्या व्रत कबहूं न टारो। विष्णु भजन कर कुल निस्तारो।।
जीव दया राखो मन माहीं। जिहिं राखे सब अघ मिटि जाहीं।।
वृष आदि स्थावर सब सृष्टि। ब्रह्मरूप यह जान समष्टी।।
इनमें नाना जीव विराजै। चेतन रूप सकल वपु छाजै।।
बिना विचारे नहीं इन्हें हरना। काट बाढ़ घर में नहीं धरना।।

अजर क्रोध जो ताहिं जरावै। लोभादि को दूर भगावै।।
निर अभिमानी ब्रह्मानन्दा। रहै मगन विचरै स्वै छन्दा।।
जीवन मुक्त सदा वैरागी। जांकी लगन स्वर्ग से लागी।।
अपने हाथ से पाक बनावै। पुन: एकांत बैठकर पावै।।
अजा अवी सब अमर रखावै। वृषभ नपुंसक होने न पावै।।
अमल तमाल भांग नहीं पीना। कर निषेध रहै सदा अदीना।।
मद्य अरु मांस कभी न खावै। नीलाम्बर तन कबहुं न लावै।।

दोहा –

उनतीस धर्म की आखड़ी, हिरदय धरियै जोय।
जम्भराय ऐसे कहै, फेर जन्म नहीं होय।।

–: चौपाई :–

उनतीस धर्म की नीति चलाई। सब शिष्यन के मन में भाई।।
विंशति नौ जब नियम बनाये। तब से ये विश्नोई कहाये।।
जांभोजी ने पंथ चलाया। सन्मार्ग सबको दिखलाया।।
शिखा सूत्र सबके उतराये। देख दशा ब्राह्मण घबराये।।
जाति भेद सब दूर भगाया। अद्भुत मार्ग खूब दिखाया।।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य मुंडाए। सतगुरु के शरणै आये।।
किये संस्कार सर्व के स्वामी। सकल गुरु जम्भानन्द नामी।।
मद्य मांस सब के छुड़वाये। पाहल दे निज दास बनाये।।
पुन: सबको यह कियो उपदेशा। हिल मिल रहना यही आदेशा।।

उनतीस धर्म का कीजो मण्डन। कीजो काम क्रोध का खण्डन।।
गुरु की बाणी बेद सम मानी। ताको पढ़ हो गये बहु ज्ञानी।।
वाणी पढ़ लहो परमानन्दा। आन मतो का त्यागो फन्दा।।
सत्यवादी निरमान कहावै। अद्वै अमल ब्रह्म गुण गावै।।
जीतो संग दोष सब भाई। ब्रह्म विद्या की करो बड़ाई।।
निवृत करो खोटे सब कामा। विष्णु पुरी में करो विश्रामा।।
हानि–लाभ में सुख–दु:ख नहीं पाना। कर सन्तोष विष्णु गुण गाना।।
जम्भ–2 पुन: जम्भ जी गाओ। निश्चय निकट जम्भ पद पाओ।।
न तहां चद्र सितारे भानूं। न तहां अग्नि विद्युत जानूं।।
उसी धाम में जम्भ विराजै। सर्वाधार सकल मन राजै।।

मन का मन पुन: सर्वाधारा। रह सर्व में सब से न्यारा।।
कारण से कारज उपजाया। कर पैंदा सबको दिखलाया।।
यह सब जानों जम्भ पसारा। जम्भ न बन्धा बन्धा संसारा।।
अद्वय अजर जम्भ अविनाशी। जिन यह सारी सृष्टि प्रकाशी।।
जम्भजी सद्‌गुरु एकोंकारा। भजो ताहि जो कटै विकारा।।
वेद पुराण विष्णु गुण गावै। नेति नेति कह भेद न पावै।।
विष्णु जगद्‌गुरु सिरजनहारा। ले अवतार मनुज तनधारा।।
दासन के तिन कारज सारे। दे उपदेश अधम जन तारे।।
विष्णु ही पूर्ण परम विधाता। बिन विष्णु को नहीं जग त्राता।।
लोहट घर हरि लीन्ह अवतारा। प्रमर गोत्र का मुकुट सितारा।।

केसर मात कृतार्थ कीन्हीं। अलभ्य मुक्ति प्रभु ताको दीन्हीं।।
और अनेक भक्त प्रभु तारे। काम क्रोध शत्रु सब मारे।।
इसी अर्थ प्रभु लीन्ह अवतारा। भक्तन का शत्रु दल मारा।।
अजर अमर गुरु जम्भ संन्यासी। पूर्ण ब्रह्म सकल घटवासी।।
परमानन्द सकल अघ जारण। आयो जंभ सकल जग तारण।।
मुनि जन सब बांके गुण गावैं। धर्म अर्थ मुक्ति फल पावैं।।
योग समाधि आप प्रभु लावैं। सब शिष्यन को योग सिखावैं।।
धारणा ध्यान समाधि बतावैं। प्रत्याहार खूब समझावैं।।
यम और नियम की बात सिखावैं। प्राणायाम खूब बतलावैं।।
इन आठन का करै विस्तारा। जम्भगुरु जग सिरजन हारा।।

वैर भाव सब से छुड़वायो। भाषण सत्य सबन समझायो।।
ब्रह्मचर्य सब का रखवावै। सब से चोरी त्याग करावै।।
सबके विषय विकार मिटावै। यही अपरिग्रह अर्थ बतावै।।

-0-0-0-

दोहा –

मास एक सूतक कहूं, रजस्वला दिन पांच।
जो इनको पालै नहीं, लगै धर्म की आंच।।1।।
प्रात:काल ऊठणों, उसी समय को स्नान।
याविधि जो वरते सदा, होत जहां तहां मान।।2।।

शील संतोष पालन करैं, उज्ज्वल राखौ अंग।
बाहर भीतर एकरस, कहै मुनिजन संग।।3।।
दोनों काल सन्ध्या करैं, शमन करै मन धीर।
इन्द्रिय गण को रोकनों, दम भाषत बुध वीर।।4।।
सायंकाल में जायके, ढूंढे निर्जन देश।
विष्णु नाम रसना जपै, लोग करै आदेश।।5।।
दत्तचित्त से होम करै, राखौ बहुत आचार।
मन में धारै विष्णु को, तब उतरै भवपार।।6।।
वाचा निशदिन बोलिये, सत्य सहित सुन वीर।
जन्म मरण से छूटकर, बनो आप गम्भीर।।7।।

पानी पी तू छानकर, निर्मल बाणी बोल।
इन दोनों का वेद में, नहीं मोल कुछ तोल।।8।।
समिधा लीजै देखाकर, कृमी बचाकर बीर।
स्थावर जंगम आत्मा, देखौ सकल शरीर।।9।।
चोरी निन्दा झूंठ को, तजियो सभ्य सुजान।
क्षमा दया उर धारिके, पहुंचो पद निर्वाण।।10।।
शुष्क वाद नहिं कीजिये, मनु बतायो जोय।
श्रद्धा लज्जा धारके, सुख पाओ सब कोय।।11।।
सुने बहुत उपवास में, इनमें नहीं कुछ सार।
व्रत अमावस को सही, कियो वेद निरधार।।12।।

व्रत अमावस के किये, मल विक्षेप को नाश।
मल विक्षेप के नाशन तैं, होतहि बुद्धि प्रकाश।।13।।
इनके खण्डन की दवा, तुझे बताई जोय।
याके राखे जगत में, बहुरि न आना होय।।14।।
ओ३म् विष्णु जपते रहो, जब लग घट में प्रान।
इसी नाम के जपन तै, मिलै श्री विष्णु भगवान।।15।।
जीव दया नित पालणी, सदाचार यह जाण।
तन मन आत्म वस करैं, पहुंचै पद निर्वाण।।16।।
हरा वृक्ष नहीं काटना, यह सब का मन्तव्य।
रक्षा में तत्पर रहै, जान यही कर्तव्य।।17।।

अजर काम अरु क्रोध है, अजर लोभ को जान।
इनको जो निशदिन जरै, सो पावै सन्मान।।18।।
संस्कार से रहित जन, सो वह शुद्र समान।
पाहल दीजै ताहिं को, कीजै ब्रह्म समान।।19।।
तिसके हाथ का अन्न-जल, अशन करो सब वीर।
अथवा अपने हाथ से, पाक बनाओ धीर।।20।।
छेरि भेड़ी आदि को, पर उपकारी मान।
रक्षा में तत्पर रहै, सोई बुद्धिमान।।21।।
इनसे अधिक जूं बैल है, परउपकारी जोय।
ताको बधिया नहीं कर, ब्रह्मवेत्ता है सोय।।22।।

भांग तमाखू छोतरा, इनका कीजे त्याग।
मद्यमांस को त्याग कै, कर ईश्वर अनुराग।।23।।
स्वेताम्बर धारण करैं, नहीं नीलाम्बर होय।
धर्म कहै उनतीस ये, धारै वैष्णव सोय।।24।।

-: छन्द :-

जंभ ब्रह्म सनातनं, गुरु एक सच्चित जानियों।
जगद्वन्द्य पुरातनं, जगदीश निश्चय भानियो।।
जंभ विष्णु विष्णु जंभ जी, यामें भेद न ठानियो।
श्रीजंभ गुण गाते हुए, दोषो को निशदिन भानियों।

चौपाई –

जैमे भानु उदय उजियारो। दूरि करै जग को अन्धियारो।।1।।
तैसे जम्भ गुरू जग मांही। सदुपदेश दे तिमिर नशांही।।2।।
सब शिष्यन के अघ प्रभु हरता। विज्ञानोदय मन में करता।3।।
ऐसा सुना महा उपकारी। क्षण में दे संशय सब टारी।।4।।
ऐसो है गुरू जम्भ विवेकी। जग में विचरै एकाएकी।।5।।
हे जम्भेश्वर परम दयालु। दूरी करो अज्ञान कृपालु।।6।।
हृदय ग्रन्थि सब दूरि भगाओ। मेरे सब सन्देह मिटाओ।।7।।
धर्म संख्या द्यो मुझे समुझाई। पृथक् पृथक् अब देओ सुनाई।।8।।
जम्भेश्वर गुरू शब्द सुनायो, जोगी का सन्देह नशायो।।9।।

उन्नतीस नियम

ओं तीस दिन सूतक, पांच ऋतुवंती न्यारो।
सेरों करो सिनान, शील सन्तोष शुचि प्यारो।।
द्विकाल संध्या करो, सांझ आरती गुण गावो।
होम हित चित प्रीत सूं होय, बास बैकुण्ठा पावो।।
पांणी बांणी ईन्धणी, दूध, ज लीजै छाण।
छिमा दया हिरदै धरो, गुरू बतायो जांण।।
चोरी निन्दा झूठ बरजियो, वाद न करणो कोय।
अमावस्या व्रत राखणों, भजन विष्णु बतायो जोय।।

जीव दया पालणी, रूंख लीलो नहि घावै।
अजर जरै जीवत मरै, वै वास स्वर्ग ही पावै।।
करै रसोई हाथ सो, आन सुं पला न लावै।
अमर रखावै थाट, बैल बधिया न करावै।।
अमल तमाखू भांग मद्य मांस सूं दूर ही भागै।
लील न लावै अंग, देखतां दूर ही त्यागै।।

-: दोहा :-

उणतीस धर्म की आखड़ी, हिरदै धरियो जोय।
जाम्भे जी किरपा करी नाम विश्नोई होय।।

अज्ञात कवि रचित बत्तीस आखड़ी

सेरा उठै सुजीव छाण जल लीजियै। दातण कर करै सिनान जीवाणि जल कीजियै।
वैस इकांयत ध्यान नाम हरि पीजियै। रवि उगै तेही वार चरण सिर दीजियै।।
गऊ घृत लेवे छांण होम नित ही करो। पंखै से अग्न जगाय फूंक देता डरो।।
सूतक पातक टाल छाण जल पीजियै। कर आत्म को ध्यान आरती कीजियै।।
मुख बोलो जै साच झूठ नहीं भाखियै। नेम झूठ सूं जाय जीभ बस राखियै।।
निज प्रसुवा गाय चूंगती देखियै। मुखां बताइये नाहीं और दिस पेखियै।।
अमावस व्रत राख खाट नहीं सोइयै। चोरी जारी त्याग कुदृष्ट नहीं जोइयै।।
नेम धर्म गुरू कहै कदे नहीं छोड़ियै। लाधी वस्तु पराई बोल देवोड़ियै।।
जीव दया नित राख पाप नहीं कीजियै। जांडी हिरण संहार देख सिर दीजियै।।

बधिया करै तो बैल जु देख छोड़ाइयै। बरजत मारै जीव तहां मर जाइयै।।
ऋतुवन्ती ह्वै नार पलो नहीं छुइयै। पांचू कपड़ा धोय न्हाय सुधि होइयै।।
सूतक पातक अन्त घरहुं लिपवाइयै। गऊ घृत सुध छांण जु होम कराइयै।।
जल छाणै दोय वारहि सांझ सवेर ही। जीवाणी जल जोड़ कुवै जाय गेरहीं।।
राख दया घट माही वृक्ष घावै नहीं। घर आवै नर कोय भूखा जावै नहीं।।
अमावस दिन धर्म इता नित पालियै। गायर बच्छो बैल बेचण सूं टालियै।।
पंथ न चालै भूल खाट न सोइयै। ऊखल खड़वै नाहीं चाकी नहीं झोइयै।।
वस्त्र धोवै नाहिं सीस नहीं धोइयै। जूवां लीखां नांव लिया पुंन खोइयै।।
ओलै अमावस दूध दधी नहीं मथ्थियै। साखी हरीजस गाय ज्ञान गुण कथ्थियै।।
दांती कसी गंडासी बांण नहीं वाइयै। साखी सबद सुनाय होम सब कीजियै।।

आन जात को पाणीं भूल नहीं पीजियै। बिन मांज्या बरतन कबहुं नहीं लीजियै।।
चौके बिना रसोई कबहुं मत करो। गऊ बैठक शत ग्रह करत तुम जन डरो।।
ब्राह्मण दश प्रकार तीन सुध जानियै। अमल तमाखू भांग लील नहीं ठानियै।।
इह औगण नहीं होय विप्र सुध है सही। और छत्तीसूं पूंण एक सम गुरू कही।।
वे अस्नाने कोय जो पलो लगावहीं। न्हायै ते सुध होय गुरू फरमावहीं।।
अपने घर में बैठ निंद्या नहीं कीजिये। देख्या सुण्यां अदेख जु अजर जरीजिये।।
त्रिधां देवा साधां सूं संग कीजिये। गुरू ईश्वर की आण नहीं भानीजिये।।
हल अरू गाठो गाडि बैल नहीं वाहिये। जीव मरे जेहि काम कदे न कराइये।।
अमावस को दूध जू भूलन भलोंय है। कदेन उतरै पार पाप बहु होय है।।
होके पाणी आग कदे नहीं दीजिये। अमल तमाखू नाम भूल नहीं लीजिये।।

जूवां लीखां काढ छाह मैं डारिये। इन मार्‌या सुख होय पुत्र क्युं नी मारिये।।
घर को बकरो भेड़ थाट संग कीजिये। बेच्यो कूट्यो बेल उलट नहीं लीजिये।।
तीसां ऊपर दोय आखड़ी गुरू कही। जो विश्नोई होय धर्म पालैं सही।।
गहै धर्म बत्तीस तीर्थ सब न्हाइया। अड़सठ तीरथ पुण्य घरां चल आविया।।
गह गुनतीस बतीस विष्णु जन जानिये। इकसट सातूं छोत अड़सठ एहि मानिये।।
देखा देखी तीर्थ और नहिं कीजिये। मन सुरती कूं जीत परमपद लीजिये।।
पाले गुरु का कवल जम्भ गुरु ध्यावे है। घाटो भूख कुरूप कदे नहीं आवे है।।
यहि विधि धर्म सुनाय कह्यो गुरू जगत नै। अज्ञानी कूं डांस प्रिये ज्ञानी भक्त नै।।
या विधि धर्म सुनायके, किये कवल किरतार। अनधन लक्ष्मी रूप गुन, मूवां मोक्ष द्वार।।

कवित

आदि अनादि युगादि को योगी,
लोहट घर अवतार लियो है।
धनहीं धन भाग बड़ो,
जिन हांसल को हरि मात कह्यो है।।
होत उजास प्रकाश भयो,
जैसे रैण घटी अरू भोर भयो है।
कोटी दवादश काज के तांही,
केशवदास भणे संभराथल आय रह्यो है।।

-: छप्पय :-

श्री सन्त वील्हा जी कृत

ॐ जम्भ गुरु जगदीश, ईश नारायण स्वामी।
निर लेखक निरलेप, सकल घट अन्तर्यामी।
पेट पीठ नहिं ताहि, सकल को सन्मुख दर्शे।
पाप ताप तन हरे, जहां पद पंकज पर्शे।
अखे अडोल अनन्त अज, अवगत अलख अभेव।
स्वयं स्वरूपी आप है, जम्भगुरू जगदेव।

जम्भगुरू जगदेव, भेव कोई बिरला पावै।
रहै शरण जो आय, बहुरि भवजल नहि आवै।
विष्णु धर्म परगट कियो, धर्म विकट विहंडनम्।
संभराथल परगट सही, ज्योति स्वरूप जगमण्डनम्।

।। इति ।।

विशेष वक्तव्य – मद्यपान करने वाले जो ईश्वर विमुख पुरूष हैं उनके पास एक क्षणमात्र भी न बैठना चाहिए। यही विश्नोई लोगों का परम धर्म श्री जम्भगुरू जी ने अपने मुख से वर्णन किया है।

आरती

आरती हो जी सम्भराथल देव, विष्णु हर की आरती जय।
थारी करे हो हांसल दे माय, थारी करे हो भक्त लिवलाय।टेर।
सुर तेतीसां सेवक जाके, इन्द्रादिक सब देव।
ज्योति स्वरूपी आप निरंजण, कोई एक जानत भेव।।1।।
पूर्ण सिद्ध जम्भगुरू स्वामी, अवतरे केवलि एक।
अन्धकार नाशन के कारण, हुए हुए आप अलेख।।2।।
सम्भराथल हरि आन विराजे, तिमिर भयो सब दूर।
सांगा राणा और नरेशा, आये आये सकल हजूर।।3।।
सम्भराथल की अद्‌भुत शोभा, वरणी न जात अपार।
सन्त मण्डली निकट विराजे, निर्गुण शब्द उच्चार।।4।।

वर्ष इक्यावन देव दया कर, कीन्हो पर उपकार।
ज्ञान ध्यान के शब्द सुणाये, तारण भवजल पार।।5।।
पंथ जाम्भाणो सत्यकर जाणो, यह खांडे की धार।
सत प्रीत सूं करो कीर्तन, इच्छा फल दातार।।6।।
आन पंथ को चित्त से टारो, जम्भेश्वर उर ध्यान।
होम जाप शुद्ध भाव सों कीजो, पावो पद निर्वाण।।7।।
भक्त उद्धारण काज संवारण, श्री जम्भगुरू निज नाम।
विघ्न निवारण शरण तुम्हारी, मंगल के सुख धाम।।8।।
लोहट नन्दन दुष्ट निकन्दन, श्री जम्भगुरू अवतार।
ब्रह्मानन्द शरण सतगुरू की, आवागवण निवार।।9।।

-0-0-0-

यज्ञ पूर्ण आहुति मन्त्र

दोनों मन्त्रों को तीन बार पढ़कर आहुति दें।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ओ३म् सर्ववै पूर्णं स्वाहा।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

धूप मन्त्र

महर करो महाराज, महर करो महल पधारो।
त्रिकुटी भवन में वास, दास के संकट टारो।
धूप घृत मिष्टान, पाय प्रभु पाप निवारो।
जम्भ गुरू जगदीश, सन्त के कारज सारो।
चौष लेह्य भक्ष भोज रस, अचवन करो अघाय।
साहब हृदय सन्त के, सदा रहो सुरराय।।1।।
धूप लीजिये जलन, धूप ले रूप समावो।
कृपा करो कर गहो, हरि तुम हिरदै आवो।

वासुदेव विश्वेश, विश्वधर ब्रह्म रहावो।
हृदय ध्वांत कूं हरी, ज्ञान उद्योत करावो।
ज्ञान अग्न जोगा अग्न, जठरा अग्न प्रचण्ड।
साहब ससितारा तड़ित, तूं ही तरूण मार्तण्ड।
तूं ही तेज तप करै, निरंजण नाम धरावै।
ब्रह्म तेज बल रचैं, विष्णु शिव पाल नसावै।
इन्द्र तेज तप करै, सप्त नवखण्ड बसावै।
शेष तेज लवलेश, शीस ब्रह्माण्ड उठावै।
तपही साध तपही ऋषी, तप कर तेज अपार।

तप कर साहब अवनिपति, तेजपुंज ततसार।।3।।
शब्द रूप सोइ जोत, जोत निहतंत भणीजै।
अमीतत सोइ जोत, जोत सब हंस गिणीजै।
तेज शीला सोई जोत, निरंजण जोत जाणीजै।
हिरण्यगर्भ सोई जोत, जोत विराट तणीजै।
महातत ब्रह्मा विष्णु शिव, सबही जोत अपार।
दस चौबीसूं जोत है, साहब सो उर धार।4।
महाजोत गुरू जम्भ, भक्त हित लीलाधारी।
सप्त वर्ष रहे मौन, सप्त बीसूं गऊ चराई।

इक्यावन कथ ज्ञान, शब्द अणभै अधिकारी।
पच्यासी त्रिय मास, तेज तप लाई तारी।
आठम सोम अठोतरै, पंद्रासै अवतार।
तिराणवै मिंगसर वद नवमी, साहब पहुंचे पार।।5।
इति धूप मंत्र साहबराम राहड़ कृत सम्पूर्णम्

कवित

ओ३म् प्रगटे जब रूप निरंजण, यह जम्भेश्वर नाम कहावन को।
गेरुवां वस्त्र धर जाप जपैं, संभराथल जाग जगावन को।
गुरु आप अखण्डित एक भजै, सब लोगन के समझावन को।
जिन पावन से महि कीन्ह शुची, धन्यवाद सदा उन पावन को।

-0-0-0-

श्री वील्हो जी कृत धूप मंत्र

ओ३म् वर्ष सात संसार, बाल लीला निरहारी।
वर्ष पांच बाईस, पाले बहुता धेनु चारी।
ग्यारह ऊपर चालीस, शब्द कथिया अविनाशी।
बाल ग्वाल गुरु ज्ञान, सकल पूगा सवा पच्यासी।
पन्दरासै तिरानवै वदि, मिंगसर नौ आगले।
पालटियो रूप रहिया ध्रूव, इडिग ज्योति संभराथले।

-0-0-0-

कवित

जोगी जंभ देव जटा जूट धारी शंभु जैसे,
भव्य देह भ्राजत है भगवां सुवेश में।
परम प्रचंड दौर दंड दंभ खंडन को,
मंडन महान धर्म देशरू विदेश में।
ज्ञान की दशा में उन्मत्त विष्णु भक्त भारी,
दत्त अवधूत जैसे देन उपदेश में।
शेष में सुरेश में दिनेश में न एते गुण,
तेते गुण गुरु में विराजत विशेष में।

-0-0-0-

छप्पय

श्री गुरु जांभा शिष्य भक्त रणधीर भंडारी।
सुवरण की जो सिलम, अछय पाई उपकारी।।
तातैं करि करि दान, मान पायो मरुधर में।
कीरति लता अखूट, घणी पसरी घर-घर में।।
मंदिर मुकाम विरच्यो महा, देखि दुष्ट जन जरि गये।
खल गरल खवायो ताहितै, तन तजि ध्रुव यश करि गये।।